सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2022 वर्ष 20 अंक 11

नया साल

नया साल आया मुबारक हो सबको
हिन्दू व मुस्लिम मसीही को सिख को
इलाही साल यह रहमत का हो
रहमत का हो खैर व बरकत का हो।
कोरोना ने हमको है पीछे किया
कोरोना ने हमको बहुत दुख दिया
कोरोना यह जाये यहां से खुदा
कोरोना न आये यहाँ अब खुदा।
हर इक फन में हम अब तरक़्क़ी करें
हर इक इल्म व सनअ़त में आगे बढ़ें
खेतों से ग़ल्ला ख़ूब मिले
दूध दही घी सब को मिले।
आमीन

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	08
हिम्मते मर्दां मददे ख़ुदा	डॉ0 ह़ाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी	10
राहे हक़ का मुसाफ़िर	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	11
हम ज़िन्दगी कैसे गुज़ारें	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	13
हाँ मगर पढ़ता हूँ कल्मा	डॉ0 ह़ाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0	18
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	19
हुज़ूर सल्ल0 की जीवनी	डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	21
सम्पादक ''सच्चा राही''	जमाल अहमद नदवी	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	29
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	30
आह! डॉ0 साहब	नजमुस्सक़िब अब्बासी नदवी	33
हज़रत उमर फ़ारूक़	इदारा	35
26 जनवरी एक स्मारक दिवस	इदारा	36
सामाजिक अपराध और उनका सुधार	नईमुर्रहमान सिद्दीक़ी नदवी	37
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद—

अल्लाह और उसके रसूल की ओर से उन मुश्रिकों से संबंध तोड़ लेने (विमुखता) का ऐलान है जिन से तुमने संधि की थी(1) तो ऐ मुश्रिको! चार महीने ज़मीन में घूम फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को बेबस नहीं कर सकते और अल्लाह काफ़िरों को अपमानित करके रहेगा[2](2) और बड़े हज के दिन[3] अल्लाह और उसके रसूल की ओर से लोगों के लिए यह ऐलान है कि अल्लाह और उसके रसूल शिर्क करने वालों से विमुख (बेज़ार) हैं फिर अगर तुम तौबा कर लो तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है और अगर तुम उलटे पाँव फिरे तो जान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते और आप काफ़िरों को दुखद अज़ाब का शुभ समाचार सुना दीजिए(3) सिवाए उन मुश्रिकों के जिनसे तुमने समझौता किया फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कुछ भी कोताही नहीं की और तुम्हारे विरुद्ध किसी की मदद नहीं की तो उनके लिए समझौतों को उनकी अवधि तक पूरा कर लो निःसंदेह अल्लाह परहेज़गारों को पसंद करता है[4](4) फिर जब आदर वाले महीने निकल जाएं तो शिर्क करने वालों को जहाँ पाओ मारो और गिरफ़्तार करो, घेरो और हर जगह उनकी घात में बैठो फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ कायम करें और ज़कात दें तो उनका रास्ता छोड़ दो निःसंदेह अल्लाह बहुत माफ करने वाला है बड़ा ही दयालु है[5](5) और अगर मुश्रिक आप से शरण मांगे तो उसे शरण दे दीजिए यहां तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले फिर उसे इत्मीनान के स्थान पर पहुँचा दीजिए यह इसलिए है कि यह लोग वे हैं जो जानते नहीं[6](6) अल्लाह के पास और उसके पैग़म्बर के पास (संधि भंग करने वाले) मुश्रिकों की संधि कैसे बाकी रह सकती है सिवाए उनके जिनसे तुमने मस्जिद—ए—हराम के पास संधि की तो जब तक वे तुम से सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो निःसंदेह अल्लाह लेहाज़ को पसंद करता है(7) कैसे (यह संधि कायम रहे) जब कि हाल यह है कि अगर वे तुम पर गालिब आ जाएं तो वे तुम्हारे बीच न किसी नाते का ख़्याल रखते हैं न वचन का, अपनी बातों से तुम्हें राज़ी करना चाहते हैं जब कि उनके दिल इनकार ही करते रहते हैं और उनमें अधिकतर वचन तोड़ने वाले हैं(8) साधारण दाम में उन्होंने अल्लाह की आयतों का सौदा कर लिया है तो वे उसके रास्ते से रोकते हैं, बड़े ही बुरे काम हैं जो वे अंजाम देते रहते हैं(9) किसी मुसलमान के हक़ में न उनको किसी नाते का

ख़्याल है और न क़ौल व क़रार का वही लोग ज़ियादती करने वाले हैं[7](10) फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ कायम करें और जकात दें तो तुम्हारे धार्मिक भाई हैं और हम उन लोगों के लिए आयतें खोल–खोल कर बयान करते हैं जो जानना चाहते हैं(11) और अगर समझौता करने के बाद वे अपनी कसमें तोड़ दें और तुम्हारे धर्म (दीन) में कटाक्ष करें तो कुफ़्र के सरदारों से जंग करो उनकी कसमें कुछ (ऐतबार) नहीं रखतीं शायद वे बाज़ आ जाएं(12) क्या तुम ऐसे लोगों से नहीं लड़ोगे जिन्होंने अपनी कसमें तोड़ दीं और पैग़म्बर को निकाल देने की फिक्र में रहे और पहले उन्होंने ही तुम से छेड़ की शुरुआत की क्या तुम उनसे डरते हो बस अल्लाह का ज़ियादा हक़ है कि तुम उससे डरो अगर तुम ईमान वाले हो[2](13)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. सूरह तौबा सूरह अन्फ़ाल ही की पूरक है, अन्फ़ाल हिजरत के शुरु समय में उतरी और सूरह तौबा अंत में, इसीलिए इसको अन्फ़ाल के बाद ही रखा गया और इस सूरह की विशेषता यह है कि इसके आरम्भ में बिस्मिल्लाह नहीं है जिसकी एक वजह यह भी बताई जाती है कि इसमें मुश्रिकों के बारे में, विमुखता का आम ऐलान है और उसी से सूरह का आरम्भ हो रहा है इसलिए बिस्मिल्लाह इसके साथ नहीं उतरी।

2. सन् 8 हिजरी में सुलह हुदैबिया के अवसर पर बनू खुज़ाअह मुसलमानों के और बनू बक्र कुरैश के सहयोगी बने और युद्ध बंदी की संधि हुई लेकिन डेढ़ दो ही साल के बाद बनू बक्र ने बनू ख़ुजाअह पर हमला कर दिया और कुरैश ने उनकी मदद की, बनू ख़ुजाअह लुटे–पिटे फरियाद लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके उत्तर में सेना लेकर पवित्र मक्का रवाना हुए, और बड़ी आसानी से मक्का पर विजय प्राप्त हुई और जिन कबीलों ने संधि भंग की थी उनसे विमुखता का एलान कर दिया गया जिन कबीलों से अनिर्धारित समझौता था और उन्होंने संधि भंग नहीं की थी उनको चार महीनों की मोहलत दी गई और अल्लाह का फैसला हुआ कि अरब प्रायद्वीप को इस्लाम का दिल करार दिया जाए और शिर्क व कुफ़्र से उसको पाक कर दिया जाए, इसकी शुरुआत मक्का विजय से हुई और अगली आयतों के द्वारा तमाम कबीलों में ऐलान कर दिया गया कि उनको मुहर्रम तक की मुहलत दी जा रही है कि वे इस अवधि में या तो इस्लाम कुबूल कर लें या अपनी व्यवस्था कर लें, अरब प्रायद्वीप में कुफ़्र व शिर्क़ के साथ नहीं रह सकते।

3. बड़ा हज इसलिए कहा गया कि उमरह छोटा हज है।

4. यह अपवाद उन कबीलों के लिए था जिनकी संधि निर्धारित समय के लिए थी और वे बराबर उस पर कायम रहे जैसे बून ज़मोरा, बनू मुदलिज आदि उनके बारे में ऐलान कर दिया

गया कि अवधि पूरा होने तक मुसलमान भी समझौते का आदर करेंगे उसके बाद कोई नया समझौता नहीं होगा, उस समय उनके लिए भी वही रास्ता है जो दूसरों के लिए था।

5. जज़ीरतुल अरब को काफ़िरों व मुश्रिकों से पाक करने के लिए युद्ध में जो कदम उठाए जाते हैं वह सब किये जायं ताकि कोई अल्लाह का विद्रोही वहां रहने न पाए फिर जो ईमान का इज़हार करे तो संदेह करने की आवश्यकता नहीं उसका रास्ता छोड़ दो, नमाज़ और ज़कात विशेष रूप से ईमान की पहचानें हैं।

6. अगर कोई इस्लामिक शिक्षाओं से अवगत न हो और वह सुनना चाहता हो तो उसको शरण दो और अपनी सुरक्षा में लेकर खुदा का कलाम और उसकी वास्तविकताएं और उसके प्रमाण सुना दो फिर अगर स्वीकार न करे तो भी उसको नुक़सान मत पहुंचाओ बल्कि सुरक्षित उसको पहुंचा दो उसके बाद वह सब काफिरों के बराबर है, इस्लाम में दाखिल करने के लिए ज़ोर ज़बरदस्ती न की जाए और न किसी काफ़िर को जज़ीरतुल अरब में रहने दिया जाए।

7. पिछली आयतों में जिस विमुखता का ऐलान था यहां उसकी वजह बयान हो रही है कि उन मुश्रिकों से क्या समझौता क़ायम रह सकता है जिन का हाल यह है कि उनको थोड़ी भी शक्ति प्राप्त हो जाए तो नुकसान पहुंचाने में न नाते का लेहाज़ करें न क़ौल व करार का, चुंकि इस समय उनको शक्ति प्राप्त नहीं इसलिए ज़बानी क़ौल व क़रार कर के तुम्हें खुश रखना चाहते हैं वरना उनके दिल एक मिनट के लिए इस पर राज़ी नहीं, तो ऐसे वचन भंग करने वाले लोगों से कैसे संधि की जा सकती है, हां जिन कबीलों से तुम मस्जिद–ए–हराम के पास सुलह समझौता कर चुके हो उसको पूरा करना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है यह परहेज़गारी की बात है, अतः बनू किनाना आदि जिन्होंनें समझौता भंग नहीं की थी बराअत के एलान के बाद उनकी सुलह की अवधि में नौ महीने बाकी थे मुसलमानों ने उसे पूरी ईमानदारी के साथ पूरा किया, आगे आयत में बताया जा रहा है कि तमाम शरारतों के बाद अगर वे तौबा करलें और इस्लामी पहचान अपना लें तो इस्लामी बिरादरी में शामिल हो जाएंगे, अल्लाह उनके सब पाप माफ़ कर देगा।

8. कुरैश ने समझौता भंग कर दिया था और बनू खुज़ाआ के विरुद्ध बनू बक्र का साथ दिया, पवित्र मक्का में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निकालने की चिन्ता में रहे, निर्दोष मुसलमानों पर अत्याचार शुरु किया, आगे आयत से मालूम होता है कि जिस क़ौम की यह दशा हो उनसे जंग करने में मुसलमानों को संकोच नहीं होना चाहि अगर उनकी शक्ति का भय हो तो ईमान वालों को सबसे बढ़ कर अल्लाह का भय होना चाहिए सब फ़ायदा नुकसान उसी के हाथ में है उसी पर भरोसा करना चाहिए।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

मासिक पत्रिका ''सच्चा राही'' के पाठक! **''प्यारे नबी की प्यारी बातें''** आप बराबर पढ़ रहे हैं, यह विषय बहुत ही लाभदायक और अनिवार्य है, अभी तक आपके सामने हदीस की किताब **''ज़ादे सफ़र''** थी, जिसके द्वारा नबी की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। अब इसके बाद हदीस शरीफ़ का दूसरा संग्रह **''तहज़ीबुल अख़लाक''** आपके सामने प्रस्तुत है जिसके संग्रहकर्ता मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0 हैं, जो प्रसिद्ध इस्लामी इतिहासकार और भूतपूर्व नाज़िम नदवतुल उलमा हैं। **''तहज़ीबुल अख़लाक़''** का उर्दू अनुवाद **''हदीस नबवी''** के नाम से है जो दारुल उलूम नदवतुल उलमा के सीनियर उस्ताद मौलाना शम्सुल हक़ नदवी के क़लम से है। अब इसका हिन्दी अनुवाद इसी शीर्षक के अन्तर्गत मौलाना जमाल अहमद नदवी सहायक **''सच्चा राही''** प्रस्तुत करेंगे।

उप सम्पादक

तौहीद इस्लाम का सबसे पहला स्तम्भः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हज़रत मुआज बिन जबल रज़ि0 को (गवर्नर बना कर) यमन भेजा तो उनसे फरमाया तुम ऐसे लोगों के पास जा रहे हो जो अहले किताब हैं, इसलिए तुम उनको सबसे पहले ख़ुदा को एक मानने की दावत देना, जब वह इसको समझ लें तो उनको बताना कि अल्लाह तआला ने दिन रात में पाँच नमाजें फर्ज की हैं। (बुख़ारी)

तौहीद ही अ़ज़ाब से बचने का ज़रियाः

हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फरमाया मुआ़ज़! क्या तुम जानते हो अल्लाह का बन्दों पर क्या हक़ है? हज़रत मुआ़ज़ रज़ि0 ने अर्ज किया कि अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादा जानते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह का हक़ बन्दों पर यह है कि उसकी इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक़ न करें, फिर फरमाया क्या तुम को मालूम है कि बन्दों का अल्लाह पर क्या हक़ है? जवाब में हज़रत मुआ़ज़ रज़ि0 ने फिर अर्ज किया कि अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादा जानते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह पर बन्दों का यह हक़ है कि वह उन्हें अज़ाब न दे। (बुख़ारी)

गैब (परोक्ष) का इल्म सिर्फ ख़ुदा को हैः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि मफातीहुल ग़ैब (ग़ैब की

चाभियाँ) यह पाँच चीज़ें हैं, जिनको अल्लाह के अलावा और कोई नहीं जानता, ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता कि कल क्या वाक़ियात पेश आयेंगे, और ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता कि गर्भाशय में क्या है (लड़का या लड़की) और उसके सिवा किसी को ख़बर नहीं कि बारिश कब होगी, और किसी को नहीं मालूम कि उसकी मौत किस जगह होगी, और ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब आयेगी।

(बुख़ारी)

हर काम अल्लाह तआ़ला ही के आदेश से होता है:—

हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी रज़ि0 से रिवायत है कि फरमाया एक रात हुदैबिया में सारी रात बारिश हुई, सुब्ह को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ाई, जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम सब की तरफ मुतवज्जेह हो कर फरमाया तुम जानते हो कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया लोगों ने कहा अल्लाह और उसके रसूल खूब जानते हैं, हुजूर सल्ल0 ने फरमाया अल्लाह ने फरमाया कि आज सुबह के वक़्त मेरे कुछ बन्दे मेरी कुदरत के क़ायल हुए, और कुछ ने इन्कार किया, जिन्होंने कहा यह बारिश अल्लाह के करम और उसकी रहमत से हुई तो यह मेरे मोमिन बन्दे हैं, सितारों के मानने वाले नहीं हैं, जिन्होंने कहा कि नक्षत्र के सबब से हुई तो वह मुझे न मानने वाले हैं, और सितारों के मोतकिद (श्रद्धालु) हैं।

शगुन और ज्योतिषी का हुक्म:—

हज़रत मुआ़विया बिन हकम रज़ि0 से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह! मुझे इस्लाम लाये हुए थोड़ा ज़माना गुज़रा है, अब अल्लाह के फज्ल से इस्लाम का दौर है, लेकिन अभी हम में कुछ लोग ऐसे हैं जो ज्योतिषयों के पास जाते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम काहिनों (ज्योतिषयों) के पास न जाना, मैंने अर्ज किया हम में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो शगुन लेते हैं, आपने फरमाया यह एक चीज़ है जिसको लोग अपने दिल में पाते हैं तो उनको चाहिए कि यह चाल उनको काम से न रोके, मैंने कहा ऐसे भी कुछ लोग हैं जो खत (लकीर खींच कर शगुन लेना) खींचते हैं, आप सल्ल0 ने फरमाया एक नबी खत खींचते थे तो अगर लोगों का खत उनके खत के मुवाफिक है तो ठीक है। (मुस्लिम)।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया छूत छात कोई चीज़ नहीं, न परिंदों से शगुन लेना दुरुस्त है, न हामा (उल्लू के बोलने, बैठने या ऊपर से उड़ने को मन्हूस जानना वगैरह) का कोई वजूद है, और न सफर (इस्लामी महीनों में दूसरे महीने का नाम सफर है) महीना में कोई नहूसत है। (बुख़ारी)

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

हिम्मते मर्दा मददे खुदा

(साहसी युवकों को ईश्वरीय सहयोग मिलता है)

–डॉ0 ह़ाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी

प्रिय पाठको! नव वर्ष की बधाई तथा शुभकामनायें लो, नये साल की मुबारकबाद और नेक ख्वाहिशात लो, जनवरी ईस्वी कलेण्डर का पहला महीना है पहली जनवरी को ईसाई मज़हब के लोग बड़ी ख़ुशियाँ मनाते हैं अपितु पहली जनवरी को एक त्यौहार की तरह मनाते हैं, उनकी ख़ुशी क्यों न हो, यह वर्ष उनके पैग़म्बर ईसा अलै0 से मंसूब है, वैसे ईसा अलैहिस्सलाम का शुद्ध सम्बन्ध ईसाईयों से नहीं मुसलमानों से है। ईसा अलै0 का शुद्ध चित्र पवित्र कुर्आन में है, ईसा अलै0 क़यामत के क़रीब आसमान से उतरेंगे और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअ़त पर चलेंगे अतः ईस्वी सन् जैसे ईसाइयों को मुबारक है, मुसलमानों को हिज्री सन् की तरह ईस्वी सन् भी मुबारक है।

दिसम्बर जनवरी में दिन छोटे हो जाते हैं, उन्नीस दिसम्बर से दो जनवरी तक हर दिन दस घण्टे चौतींस मिनट का होता है। तीन जनवरी से दिन एक–एक मिनट बढ़ना आरम्भ हो जाता है, कुछ लोग समझते हैं कि पच्चीस दिसम्बर से दिन बढ़ता है, इसलिए कि वह बड़ा दिन कहलाता है लेकिन पच्चीस दिसम्बर बड़ा दिन ''क्रिसमस डे'' के कारण कहलाता है, वैसे साल का बड़ा दिन इक्कीस जून को होता है। इक्कीस जून को सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच का समय तेरह घण्टे छप्पन मिनट का होता है। महामारी कोरोना ने भारत को बहुत हानि पहुँचाई परन्तु हमारे भारतीय युवक बड़े साहसी हैं, हर मैदान में जो हानि हुई है उसकी पूर्ती करते रहेंगे, स्कूल, कालेज खुल गये हैं, हमारे अध्यापक तथा लेक्चरर, शिक्षण तथा प्रशिक्षण में जो क्षति हुई है उसको जल्दी ही पूरा कर लेंगे। हमारे किसान ने तो खेती से अनाज पैदा करने में कमी नहीं होने दी थी, अब वो और ध्यान देंगे, जिनको सुविधा होगी वह पशुपालन से अपनी आय बढ़ायेंगे तथा दूध का अधिक उत्पादन करेंगे, जिनको सुविधा होगी मुर्गीपालन, मच्छली पालन, मधुमक्खी से अपनी आय बढ़ायेंगे और देश की सेवा करेंगे। जो मज़दूर और कलाकार बेकार हो गये थे, सब अधिक परिश्रम करके देश को उन्नति की ओर बढ़ायेंगे। कारखाने वाले, मिल वाले अच्छा उत्पादन करेंगे, देश से निर्यात बढ़ायेंगे, निर्माण विभाग वाले निर्माण में अधिक ध्यान देंगे, पुल बनेंगे, सड़कें बनेंगी, कारोबार में उन्नति होगी, खुदा ने चाहा तो यह दो हज़ार बाईस का सन् विजय तथा उन्नति का होगा, हमारे युवक देश को आगे बढ़ाने का पूरा प्रयास करेंगे, हिम्मते मर्दा मददे खुदा। उनको ईश्वरीय सहयोग मिलेगा।

नोटः– इस लेख में जो समय दिया गया है वह दायमी जंत्री से दिया गया है और वह लखनऊ का समय है। ◆◇◆

राहे हक़ का मुसाफिर

डॉ0 हाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी मरहूम,

–मुहम्मद गुफ़रान नदवी

हिन्दी मासिक पत्रिका **''सच्चा राही''** के पाठकों और सम्बन्धियों के लिए बहुत ही खेदजनक और तकलीफ़देह सूचना है कि ''सच्चा राही'' के सम्पादक डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी की एक लम्बी बीमारी के बाद 6 दिसम्बर, 2021 को इन्तिक़ाल हो गया ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर हम जाने वाले हैं (अल कुरआन)। डॉ0 साहब का जन्म 11 अगस्त 1933 ई0 को पूरे रज़ा खाँ रुदौली जिला फ़ैज़ाबाद में हुआ, डॉ0 साहब की प्रारम्भिक शिक्षा प्राइमरी और मिडिल स्कूल तक रुदौली में हुई, नाज़िरह और हिफ़्ज कुरआन खुद से किया बाद में क़ारी सिद्दीक़ कानपुरी को कुरआन सुनाया। डॉ0 साहब परिश्रम और लगन के आदमी थे, यदि उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव और इलाक़े से प्राप्त की परन्तु लखनऊ पहुँच कर हाई स्कूल से लेकर बी0ए0 और एम0ए0 के साथ उच्च श्रेणी तक पहुंच गये, आर्थिक स्थिति कमज़ोर थी इसलिए जीवन यापन के लिए उन्हें प्राइवेट नौकरयाँ करनी पड़ीं, इन सारी कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने अपना इल्मी सफ़र जारी रखा, यहां तक कि उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से पी0एच0डी0 कर लिया, पी0एच0डी0 में उनके सुपरवाइज़र डॉ0 शबीहुल हसन नानोरवी थे। इन्सान की हिम्मत जब बलन्द होती है तो कुदरत उस का साथ देती है, चुनांचि इल्म की तलब और तलाश में डॉक्टर साहब सऊदी अरबिया रियाज़ युनिवर्सिटी पहुँच गये, वहां डॉ0 साहब 1979 ई0 से 1985 ई0 तक रहे और हदीस शरीफ़ में एम0ए0 की डिग्री प्राप्त की, नदवा के ज़िम्मेदारों के मशवरे से लखनऊ वापस आ गये, उनकी नियुक्ति मदरस–ए –सानविया में हुई,जहां उन्होंने उप प्रधानाध्यापक और प्रधान अध्यापक की हैसियत से सोला साल तक ख़िदमत अनजाम दी, तालीमी हैसियत से डॉ0 साहब का यह ज़माना बहुत ही कामयाब और ताबनाक था, शिक्षण और प्रशिक्षण में डॉ0 साहब को विशेषता प्राप्त थी जिस के परिणाम स्वरूप बड़ी सलाहियतों वाले विद्यार्थी तैयार हुए जो अच्छे और ऊँचे पदों पर पहुंचे और इल्मी व दीनी मैदान में काम किया। डॉ0 साहब अकीद–ए–तौहीद, अक़ीद–रिसालत और अक़ीद–ए–आख़िरत में बहुत पक्के थे, इन बुन्यादी अक़ायद के विरुद्ध कोई बात स्वीकार नहीं की, तक़रीर हो या लेख हो या भाषण उसके जांचने का पैमाना डॉ0 साहब के नज़दीक यही था, डॉ0 साहब एक अच्छे लेखक थे, गद्य और पद्य दोनों में उनको कुशलता प्राप्त थी, अपने विचारों को भलीभांति सरल भाषा में पेश करते थे। देश की वर्तमान स्थिति से प्रभावित थे और कहते थे कि हमारे देश में ''लॉ एण्ड आर्डर'' नाम की कोई चीज़ नहीं है, गणतंत्र दिवस के अवसर पर

कुछ छंद कहे थे वह प्रस्तुत हैं:–

भीड़ की हिंसा जारी है
शासन पे वह भारी है
कर दें वह मस्जिद मिसमार
जिसको चाहें डालें मार
सज़ा नहीं वह पाते हैं
भीड़ में वह छुप जाते हैं
इससे मिलता है यह सन्देश
जिसकी लाठी उसकी भैंस

इसी प्रकार हालात से प्रभावित हो कर वह लिखते और कहते थे। डॉ0 साहब उर्दू हिन्दी अंग्रेज़ी के अतिरिक्त अरबी, फारसी भी भली भांति जानते थे, कई साल से नेत्र ज्योति से वंचित थे, लेकिन दूसरों की सहायता से लिखने पढ़ने का काम कर लेते थे, शारीरिक रूप से वह मजबूर थे परन्तु दिमाग़ काम कर रहा था, जनवरी माह का ''सच्चा राही'' अंक आपके सामने प्रस्तुत है। यह मरहूम का तैयार किया हुआ है, देहांत सम्बन्धित निबन्ध बाद में सम्मिलित किये गये।

डॉ0 साहब के सम्बन्ध में इस समय संक्षिप्त में लिखा गया है इनशाअल्लाह अगले अंक में विस्तार से लिखा जायेगा।

डॉ0 साहब ने कुछ पहले अहले नदवा और आप सब को सलाम पेश किया है और दुआ की दरख़्वास्त की है:–

अस्सलाम ऐ अहले नदवा अस्सलाम
मैं चला अपने वतन को वस्सलाम
कूच का अब वक़्त है बिल्कुल क़रीब
अब मुझे रुख़्सत करें और लें सलाम
एक मुद्दत से रहा ख़िदमत में हूँ
दरगुज़र कर दें ख़ताएं वस्सलाम
मैं दुआओं का बहुत मुहताज़ हूं
अब दुआएं दें मुझे और लें सलाम
गरचि बख़शिश की मुझे उम्मीद है
फिर भी तो है ख़ौफ़ तारी अस्सलाम
मैं नबी-ए-पाक का हूँ उम्मती
रहतमें उन पर हों और लाखों सलाम

❖❖❖

बुरे काम का प्रभाव और उसका परिणाम

इस समय दुन्या के जो हालात हैं और जो एक मुसीबत आई हुई है, लोग परेशानियों और बीमारियों में व्यस्त हैं, यह सब यूं ही नहीं हो रहा है, अल्लाह तआला के यहां हर चीज़ पहले से निश्चित है, और उसकी कार्यविधि भी तय है, हम में से बहुत से भाई ऐसा कहते हैं कि फ़ला ने ऐसा कर दिया, फलां के करने से ऐसा हो गया, जिसने जो भी किया, वास्तविकता यह है कि वह अल्लाह के हुक्म से किया और जो कुछ होता है वह सब अल्लाह के करने से होता है, दुन्या का कोई निज़ाम छोटा हो या बड़ा, अल्लाह के हुक्म के बिना नहीं चल सकता, कुर्आन मजीद में अल्लाह तआला ने कई जगह ज़िक्र फ़रमाया है कि जो मुसीबतें तुम्हारे ऊपर आती हैं वह तुम्हारे हाथों की लाई हुई होती हैं।

''तुम लोगों पर जो मुसीबत भी आई है, तुम्हारे अपने हाथों की कमाई से आई है''।

(अश–शूराः 30)

हम ज़िन्दगी कैसे गुज़ारें?

—ह0 मौ0 सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

(यह ख़िताब मौलाना ने यूरोप के किसी मुल्क में हिन्दुस्तानी मुस्लिम महिलाओं से किया है)

अल्लाह तआला का शुक्र है कि अल्लाह तआला ने हमको मुसलमान पैदा किया, मुसलमान घरों में पैदा किया और ईमान नसीब फ़रमाया और शरीफ़ घरानों में हमने आँखें खोलीं और फिर अल्लाह तआला का और ज़ियादा फ़ज़्ल है कि दीनदार घरानों में हमारी परवरिश हुई और फिर यह बड़ा एहसान फ़रमाया कि मर्दों से अल्लाह तआला ने तबलीग़ी काम शुरु कराया और उसकी बरकत घरों तक पहुंची और अब तो अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से घरों में हमारी माएं और बहनें तबलीग़ी काम करने लगी हैं, उसकी बरकत से हम अच्छा बुरा समझने लगे, हराम हलाल, नेक व बद, जाएज़ व नाजाएज़, अल्लाह किस चीज़ से राज़ी या नाराज़ होता है, इसकी कुछ सूझ बूझ होने लगी, और इसकी पूछ गछ भी शुरु हुई कि ज़िन्दगी की कौन सी चीज़ें अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसन्द हैं और कौन कौन सी चीज़ें ऐसी हैं जो अल्लाह को नापसन्द हैं ज़िन्दगी कैसी होनी चाहिए, घरों में रहना सहना कैसा होना चाहिए लिबास और कपड़े किस तरह होना चाहिए कौन शरीअत के मुताबिक हैं और कौन से शरीअत के ख़िलाफ़ हैं, इन बातों का अब घरों में चर्चा होने लगा है। आप सब इस मुल्क में आई हैं, यहां बहुत दिनों से या सैकड़ों बरस से ख़ुदा का ख़ौफ़ शर्म व हया, लिहाज़ और तहज़ीब नहीं रही, यहां सिर्फ़ एक ही काम रहा, खाओ पियो और मस्त रहो, चुनांचे अंग्रेज़ों में कहावत है ''खाओ पियो मस्त रहो, मगन रहो'' यह मगन रहना उनके यहां ज़िन्दगी का सिद्धान्त है, जिसमें आदमी मगन रहे और मस्त रहे, मौत कभी भूल कर भी याद न आये कि हमको मरना है, हमको ख़ुदा के सामने जाना है, यहाँ जो मज़े उड़ाए हैं, गुल छर्रे उड़ाए हैं, उनका जवाब देना है, यहां जो मौज उड़ाया है उसका पाई पाई हिसाब देना है।

यहां ज़िन्दगी का उसूल यह है कि आदमी मौत को भूला रहे, आख़िरत को भूला रहे, अल्लाह और रसूल सल्ल0 को छोड़े रहे और सिर्फ़ उमदा से उमदा खाना खाना, अच्छी से अच्छी सेहत बनाना, जवानी का मज़ा उड़ाना और दौलत के मज़े उड़ाना याद रखे यह यहां की ज़िन्दगी का उसूल बन गया है।

लेकिन ख़ुदा के फ़ज़्लो करम से हमारा जिस मज़हब से तअ़ल्लुक़ है और जिस मुल्क से तअ़ल्लुक़ है जिन लोगों से तअल्लुक़ है उनकी ज़िन्दगी का उसूल यह नहीं है, उनको तो यह बताया गया है कि दुन्या काफ़िर की जन्नत और मुसलमानों का जेल ख़ाना है, जेल ख़ाने में आदमी मौज नहीं उड़ाता, जेलख़ाने में आदमी आज़ाद नहीं होता, कि घूमने पर आया तो घूमता चला गया जो दिल में बात आई जो मनमें चाहत हुई बस वह कर गुज़रे कोई रोक टोक नहीं, कोई पाबन्दी नहीं, जेल ख़ाने में घूमने फिरने की जगह नपी तुली, खाने का हिसाब भी नपा तुला, खाने पीने

का जी कुछ चाहता है, मिल कुछ रहा है पसन्द कुछ है और खिलाया कुछ और जा रहा है, कभी पहनने को जी चाहा, कभी सैर करने का जी चाहा, हवा ख़ोरी का जी चाहा मगर यह तो चार दीवारी, यह तो जेल की कोठरी है और काफ़िर के लिए क्या है? बस एक बहुत बड़ा पार्क़, एक बहुत बड़ा बाग़, एक बहुत बड़ा चमन, चाहे लोटे पोटे, चाहे घूमें, चाहें नंगा फिरे, चाहे चिल्लायें चहकें, चाहे बैल की तरह चले, खाये पिये कोई बोलने वाला नहीं, कोई पूछने वाला नहीं, तो ''दुन्या काफ़िर की जन्नत और मोमिन का जेल ख़ाना''।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः– ''दुन्या में इस तरह रहो जैसा कि तुम परदेश में हो या कि रास्ता चलते मुसाफिर'' जो मुसाफ़िर होता है उसका जी कहीं नहीं लगता, वह किसी जगह अपना घर नहीं बनाता, किसी स्टेशन पर ठहर नहीं जाता, देखता सब कुछ है, गुज़रता सब जगहों से है लेकिन अपने बतन को नहीं भूलता और न अपनी मन्ज़िल को भूलता है, कहां से चले थे और कहां जाना है और जहां जाना है वहां से काम करके फ़ौरन आना है, जैसे चिड़ियाँ दिन भर उड़ती रहती हैं और दिन भर जगह–जगह से दाना चुगती हैं लेकिन अपने आशियाने और घौंसले को भूलती नहीं कि कहीं और पहुंच जायें लेकिन शाम हुई कि सीधे अपने घर वापस आती हैं, किसी शाख़ पर वही तिनकों और पत्तियों का बना हुआ घोंसला, दिन भर चाहे किसी अमीर के महल पर जा कर किसी ऊँची से ऊँची कोठी पर जा कर अपना चारा तलाश करें, शाम हुई तो अपना घर याद आया, बाल बच्चे याद आये, उड़ कर वहीं पहुँचीं, यही मोमिन का हाल है कि दुन्या में सारा दिन घूमता फिरता रहे काम काज करे, दुकान पर बैठे, दस दस घण्टे डयूटी दे लेकिन उसको असली बस्ती नहीं भूलती, उसको क़ब्र का कोना नहीं भूलता, वहां सैकड़ों हज़ारों बरस सोना है, उसको आख़िरत नहीं भूलती, यानी जैसे ही दुन्या का काम ख़त्म हुआ, अपने असली वतन की राह ली।

मुसलमान को अपना असली वतन नहीं भूलना चाहिएः–

मुसलमान को अपना असली वतन नहीं भूलना चाहिए, हमारे लिए हिन्दुस्तान, फ्रांस, जरमनी, और बड़े से बड़े मुल्क अमरीका, कनाडा सब बराबर हैं हम कहीं भी हों अपना वतन नहीं भूलना चाहिए, चाहे वह महल हो या झोपड़ा, लेकिन दिल हमारा ख़ुदा के पास रहना चाहिए, हमारा जिस्म कहीं भी हो, हम को असल जगह नहीं भूलना चाहिए, जहां हम को मुद्दतों रहना है, वह क़ब्र का कोना है जहां अंधेरा है, क़ब्रिस्तान जो जंगल में है शहर की आबादी से दूर, जहां न शहर के बच्चों की आवाज़ पहुँच सकती है न बड़ों की, वहां तो आदमी है और उसका अमल, जो नमाज़ें टूटी फूटीं पढ़ीं, जो कलिमा पढ़ा, दुरूद शरीफ़ पढ़ा, वह वहां काम देगा, इसी से वहां दिल लगेगा, वही वहां का तकिया वही वहां का बिछौना, वही वहां की रोशनी, वही वहां का चराग़ वहां जो कुछ काम आयेगा, वह नूरे ईमान काम आयेगा, अल्लाह का नाम काम आयेगा। ज़िन्दगी में अल्लाह के साथ जो तअल्लुक़ पैदा किया है वह काम आयेगा, नमाज़ में अगर यहां दिल लगा है तो वहां भी दिल ख़ुश होगा, अगर कलिमा नमाज़ और ईमान की बातों में दिल नहीं लगा है और तबीअ़त हमेशा उचाट रही और वही कपड़ों में ज़ेवर में खाने

पीने में, कोठी में, मोटर में, अगर दिल फंसा रहा तो वहां वहशत होगी, वहां उनमें से कोई चीज़ मौजूद न होगी, यह चीज़ें तो क्या होंगी, बाप भी मदद करने के लिए, माँ भी दिलासा देने के लिए, बेटी भी ख़िदमत करने के लिए, बेटे भी सुलूक करने के लिए वहां मौजूद न होंगे, वहां न माँ की शफ़क़त होगी और न बाप की मेहरबानी और न औलाद की सआदत मन्दी होगी और न बेटों की ख़िदमत, वहां वही एक नाम अल्लाह का, अल्लाह का नाम काम आयेगा और ईमान का नूर काम आयेगा, नमाज़ रोज़े का नूर काम आयेगा, कुर्आन की रौशनी काम आयेगी, और जो अल्लाह का ज़िक्र किया बस वही काम आयेगा।

हदीस में है कि ''कब्र जन्नत के बागों में से एक बाग़ होगी या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा'' वहां जो काम आने वाली चीज़ें हैं वह ख़ुद कुछ नहीं, यहीं के अच्छे आमाल बाग़ बन जायेंगे, उन्हीं अच्छे आमाल से जन्नत की हवाएं आयेंगी, हदीस में आता है कि क़ब्र में खिड़की खोल दी जाती है, वहां पहले से जन्नत की हवाओं के झोंके आने लगते हैं, ख़ुशबुएं आने लगती हैं उनसे मालूम होता है कि यही हमारा ठिकाना है। हदीस में यह भी आता है कि मरने के वक़्त और मरने के बाद उसका ठिकाना उसको दिखाया जायेगा कि तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है या जन्नत, और यह भी हदीस में है कि अगर किसी के अच्छे अमल हैं, ईमान सलामत ले कर गया है तो उससे कहा जाता है ''निम नैमतिल उरूस'' सो रह जैसे दुल्हन सोती है।

क़ब्र की फ़िक्र ही वास्तविक फ़िक्र है:—

उस घर की फिक्र करना चाहिए और जो चीज़ें वहां काम आने वाली हैं उनकी फ़िक्र करना चाहिए, यहां के सामान का हाल यह है कि बचपन का सामान जवानी में काम नहीं आता, जवानी का सामान बुढ़ापे में काम नहीं आता, बचपन में जो कपड़े थे जवानी में पहने नहीं जाते और जवानी में जो कपड़े हैं वह बुढ़ापे में पहन्ना मुनासिब नहीं यह तो जवानी के शौक़ थे, बुढ़ापे में कपड़ा और होता है और अब तो दो महीने पहले के कपड़े काम नहीं आते, यहां योरोप पर ऐसी मुसीबत आई है और उसकी बदौलत सारी दुन्या पर, यहां महीने दो महीने में फैशन बदलते हैं, पहले फैशन के मुताबिक़ जो कपड़े बना लिए, अब जब फैशन बदल गया तो बिल्कुल पुराने और दक़यानूसी (अगले ज़माने के) मालूम होने लगते हैं और उनको पहन कर शादियों में जाना मायूब (दूषित) समझा जाता है, ऐसी बेमुरव्वत, आँख चुराने वाली और मुंह मोड़ने वाली और जल्दी से जल्दी बदल जाने वाली तहज़ीब, सभ्यता, उस पर अगर दिल लगाया तो उससे ज़ियादा मूर्ख कौन होगा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का क़िस्सा:—

हज़रत इब्राहीम अलै0 ने जब सितारा देखा तो कहा कि यह तो बड़ा चमकदार है, कुछ अजब नहीं कि दुन्या का पैदा करने वाला हो, अब जो सितारा गुरूब हुआ और डूब गया तो उन्होंने कहा कि यह तो कुछ नहीं, इसका कोई भरोसा नहीं, फिर चाँद देखा तो कहा सुबहानल्लाह चाँद का क्या कहना, कैसी रौशनी, सारी दुन्या रौशन, सारी दुन्या में चांदनी फैली हुई है, उन्होंने कहा, शायद यही ख़ालिक़ हो, फिर गुरूब हुआ तो कहने लगे, यह भी कुछ नहीं, इसका भी कुछ ज़ोर नहीं, इसका भी

भरोसा नहीं, फिर जब सूरज निकला और उन्होंने उसकी चमक देखी और दिन हुआ तो कहने लगे, वाह वाह, इससे बढ़ कर तो कोई रोशनी नहीं, सितारा भी उसके सामने मांद और चांद भी उसके सामने शरमिन्दा, बस यह सूरज ही सूरज है फिर जब सूरज भी डूबने लगा तो कहने लगे, ''ला उहिब्बुल आफ़िलीन'' मैं ऐसे मुँह छुपाने वालों और ऐसे बे मुरव्वतों और ऐसे आँख बन्द करने वालों से अपना दिल नहीं लगा सकता, जिसके साथ दिल लगाये, वह ''हय्यु क़ैय्यूम'' हमेशा रहने वाली ज़ात हो, हमेशा रहने वाली ज़ात हो।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का दिया हुआ सबक़ याद रखना चाहिएः—

हज़रत इब्राहीम अलै0 ने जो हमारे आपके मूरिस (पूर्वज) और पैग़म्बर हैं और सबसे आख़िर में आने वाले पैग़म्बर के दादा भी हैं उन्होंने यह सबक़ दिया कि जो बे मुरव्वत हो जो आँखें फेरने वाला हो उससे दिल नहीं लगाना चाहिए, जवानी, ताक़त, ज़िन्दगी यह सब मुँह छुपाने वाली, साथ छोड़ देने वाली बिछड़ जाने वाली, और बेवफ़ा और बे मुरव्वत, जो इनसे दिल लगाये तो उससे बढ़ कर कोई बेवकूफ नहीं, अगर किसी ने यह समझा कि जवानी में जवानी के काम करना चाहिए और कुछ लिहाज़ न करना चाहिए, तो जब बुढ़ापा आयेगा और यह रंग रूप यह शक्ल व सूरत बाक़ी नहीं रहेगी, उस वक़्त मालूम होगा कि हमने इस बेवफ़ा जवानी की वजह से उस रहमान व रहीम ख़ुदा की नाफ़रमानी की, ख़ुदा की रहमत कभी साथ नहीं छोड़ती, वह हमेशा काम आती है, वह अंधेरे में, उजाले में, अमीरी में ग़रीबी में, जवानी व बुढ़ापे में, वतन व प्रदेश में हर जगह और हमेशा साथ देनी वाली है, ''अल्लाहु मअ़कुम'' अल्लाह तुम्हारे साथ है, अल्लाह तआला फ़रमाता है ''तुम तीन होते हो तो चौथा ख़ुदा होता है, चार होते हो तो पांचवा ख़ुदा होता है, थोड़े होते हो या बहुत होते हो, बाज़ार में होते हो या घर में होते हो हम साथ होते हैं, अल्लाह तआला हर जगह मौजूद है, हर एक को देखने वाला है हर एक की मदद करने वाला है, अल्लाह तआला फ़रमाता है ''जब मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछते हैं कि ख़ुदा कहां है तो, कह दो कि मैं क़रीब हूँ'' वह हर पुकारने वाले की पुकार सुनता है, तो ऐसे ख़ुदा ऐसे मालिक मेहरबान, ऐसे रहीम करीम ऐसे मदद करने वाले, ऐसे रहम खाने वाले ऐसे सहारा देने वाले ख़ुदा का साथ दिया जायेगा या बेवफ़ा जवानी का, बेवफ़ा हुस्न व जमाल का, या बेवफ़ा साथियों और बेवफ़ा रफ़ीक़ों, या बातें बनाने वाली सहेलियों और बहनों का, या ऐसे फ़ैशन का जो सुब्ह है तो शाम उसका ठिकाना नहीं, शाम है तो सुब्ह उसका ठिकाना नहीं, उसका साथ दे कर अल्लाह की नाफ़रमानी करे, उससे बढ़ कर कौन सी बेअक़्ली और बेवकूफी हो सकती है, उस ख़ुदा का क्यों न साथ बढ़ कर दें जो हर वक़्त हमारे साथ है यहां भी काम आयेगा और क़ब्र में भी, उसी की ही दस्तगीरी काम आयेगी, और हश्र में वही है और कोई है ही नहीं, उस ख़ुदा से तअल्लुक़ पैदा करना चाहिए, उससे महब्बत पैदा करना चाहिए, उससे ऐसी जान पहचान पैदा कर लेनी चाहिए, उस पर ऐसा भरोसा होना चाहिए कि आदमी को हर वक़्त एक ढारस रहे, हर वक़्त हौसला रहे कि हमारा ख़ुदा हमारे साथ है, हमारा कोई क्या बिगाड़ सकता है, हमारी दौलत को कोई अगर ले ले तो

हमारा ईमान तो किसी ने नहीं लिया, अगर हमारी जवानी ख़त्म हो गई तो ईमान तो ख़त्म नहीं हुआ, ख़ुदा का साथ तो नहीं छूटा, अगर दौलत ने मुँह छुपा लिया और बेवफ़ाई की, अगर शौहर ने भी बेवफ़ाई की तो कोई रंज नहीं, हमारा ख़ुदा तो हमारे साथ है, अगर ख़ुदा हमारे साथ है तो सब कुछ हमारे साथ है।

सब कामों की कुंजी, अल्लाह से तअल्लुक़ः–

मैं आप सबसे कहता हूँ, अल्लाह को याद करना, अल्लाह से मांगना अल्लाह को राज़ी रखना सीख लीजिए, सब काम बन जायेंगे, दुन्या की जितनी चीज़ें हैं सब बेवफ़ा, बेमुरव्वत हैं, जवानी है, सेहत ख़राब, क़िस्सा ख़त्म, सेहत ठीक तो कारोबार फ़ेल तो सब बेकार, अगर ख़ुदा को महबूब रखे तो जवानी भी है सेहत भी है और सब कुछ है। सारी मुश्किलों, मुसीबतों का इलाज एक अल्लाह का तअल्लुक़ पैदा करना है, वही सब कुछ करता है, अल्लाह की नेक बन्दियों के हालात पढ़ो कि उन्होंने किसी चीज़ में दिल नहीं लगाया, न जवानी में न सेहत में, न ताक़त और हुस्नो जमाल में, उन्होंने सिर्फ़ अल्लाह के साथ तअल्लुक़ पैदा किया। अल्लाह का नाम लेना, रातों को उठना, तौबा इस्तिग़फ़ार पढ़ना, तिलावते कुर्आन करना, इस्लामी अक़ाएद पर बच्चों की परवरिश करना, तौहीद के बीज उनके दिल में बोना, गुनाह की नफ़रत पैदा करना, अल्लाह का नाम सिखाना, इस्लामी आदाब व अखलाक़ की तालीम देना, यह उनके काम रहे, नतीजा यह कि घर का माहौल इस्लामी, दिल ख़ुश अल्लाह राज़ी तो सब राज़ी अगर अल्लाह नाराज़ तो सब नाराज़, अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीबियों से फ़रमाया हैः–

''पुरानी जाहिलियत के मुताबिक़ अपने को दिखाती मत फिरो'' (सूरः अहजाब–33)

तुम्हारा दिल घरों में लगना चाहिए, सनीमा घरों में नहीं, महफ़िलों और बाज़ारों में नहीं, तुम्हारी जगह तुम्हारी सल्तनत तुम्हारा घर है, ग़रीब हो या अमीर बाहर निकलोगी तो तुम बहन रहोगी।

जो घर में हो, घर में तुम्हारा हुक्म चलेगा, औलाद तुम्हारी ख़िदमत करेगी, घर सुकून व इत्मीनान की जगह है।

अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्ल0 की बीबियों के लिए जो पसन्द किया वही तुम को अपने लिए पसन्द करना चाहिए, वही हमारे लिए नमूना, है, इस्लाम से पहले का ज़माना जो जाहिलयत का ज़माना था, उसकी तरह बनाओ श्रृंगार करो, नमाज़ पढ़ो ज़कात दो, नमाज़ के लिए जगह मुकर्रर करो, जगह पाक व साफ़ हो कि तस्वीह पढ़ सको, दीनी किताबों का मुताला कर सको, अपने बच्चों को दीन की बातें सिखा सको, जो वक़्त बचे उसमें शौहर की ख़िदमत करो।

हज़रत मौलाना इलियास साहब, मौलाना यूसुफ़ साहब और शेखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करया रहमतुल्लाह अलैहि की माओं के क़िस्से पढ़िये, वह कैसी आबिदा, ज़ाहिदा थीं, उनकी रातें कैसी गुज़रती थीं, दिन कैसे गुज़रते थे, नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने उनको कैसी औलादें अता फ़रमाईं जिनके नूर से सारा आलम रौशन है। अब जो औलाद माँ की गोद में पलती है, ज़ाहिर है कि वह कैसी होगी, जैसी गोद वैसी औलाद, जब वह ज़बान से अल्लाह का नाम न लेंगी तिलावत न करेंगी तो क्या असर होगा।

❖❖❖

हाँ मगर पढ़ता हूँ कल्मा वस्सलाम

—डॉ0 हाफिज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी (रह0)

अस्सलाम ऐ अहले नदवा अस्सलाम
है सफ़र अपने वतन का अस्सलाम
कूच का अब वक़्त है बिल्कुल क़रीब
क्यों न कह लूं आप को मैं अस्सलाम
है तवक़्को रब से बख्शिश की मुझे
फिर भी तो है ख़ौफ़ तारी, अस्सलाम
गर दुआऐ मग़फिरत की आप ने
होगा एहसान, लो चला मैं, अस्सलाम
साठ से खिदमत में हूं मैं आप की
दरगुज़र कर दें खतायें, अस्सलाम
हूं मैं इन्सान मेरी फितरत भूल चूक
हाँ मगर पढ़ता हूँ कल्मा वस्सलाम
ताएबे आ़सी नबी का उम्मती
पढ़ रहा है उन पे हों लाखो सलाम

नोटः— 23 अप्रैल, 2015 ई0 (3 रजब 1436 हिज्री) को तबीय्यत ज़ियादा ख़राब होने पर यह अशआ़र कहे।

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

—मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

अल्लाह पर ईमान?

अल्लाह पर यकीन करना और उसको उसी तरह मानना जैसा कि उसके बारे में उसके नबियों ने बताया इसको अल्लाह पर ईमान कहते हैं, कुरआन मजीद अल्लाह की आखिरी और मुकम्मल किताब है, जिस में अल्लाह की सिफात (गुण) बयान की गई हैं। जब उसकी सिफात बयान की जाती हैं तो कुरआन मजीद उनको खोल खोल कर बयान करता है, सूरह हश्र की आखिरी आयतें इसकी खुली मिसाल हैं, इरशाद होता है।

अनुवादः— *''वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, हर छुपी—खुली चीज का जानने वाला है,वही रहमान व रहीम है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, जो बादशाह है, पाक है, सलामती ही सलामती, अमन देने वाला है, सबकी देख रेख करने वाला है, गालिब है,जबरदस्त है, बड़ाई का मालिक है, अल्लाह तआला उनके हर तरह के शिर्क से पाक है। वही अल्लाह है जो पैदा करने वाला है, वजूद देने वाला है, शक्ल देने वाला है, उसके अच्छे—अच्छे नाम हैं, जो भी आसमानों और जमीन में हैं सब उसी की पाकी बयां करने में लगे हुए हैं और वही गालिब है हिक्मत (युक्ति) वाला है।''*

(अल—हश्र 22—24)

और जब अल्लाह की हर चीज से पाक होने को बयान किया जाता है तो इसको बिलकुल दो टोक शब्दों में बयान कर दिया जाता है और बात साफ कर दी जाती है कि।

अनुवादः— *''उस जैसा कोई नहीं वो खूब सुनता देखता है।'' (अल—शूराः 11)*

वो अपनी जात और सिफात (गुण) में यकता व अकेला है, कोई उसके जैसा नहीं, यही तौहीद का अकीदा है, जो ईमानियात के अध्याय में बुन्यादी हैसियत रखता है।

तौहीद का अकीदाः—

तौहीद कहते हैं एक मानने को, इसका संबंध अल्लाह की जात सिफात (गुण) से है, कायनात (ब्रह्माण्ड) का जर्रा—जर्रा पुकार कर कहता है कि इन सारी चीजों का एक पैदा करने वाला है, सारी व्यवस्था उसी के हाथ में है,वो जिस तरह चाहता है उसको चलाता है, उसके अच्छे अच्छे नाम हैं, उन नामों से उसे पुकारा जाए और सिर्फ उसी की बंदगी की जाए, इबादत के सारे अमल उसी के लिए खास हैं, किसी को इबादत में उसके साथ शरीक न किया जाए, सिर्फ उसी के आगे सर झुकाया जाए और उसी को ''मुश्किलकुशा'' (संकटमोचक) और जरूरतें पूरी करने वाला समझा जाए।

अल्लाह तआला ने दुन्या बनाई ,और उस में इंसान को आबाद किया, हजरत आदम (अलैहिस्सलाम) सबसे पहले इंसान हैं जिनको उनकी बीवी

हजरत हौव्वा (अलैहस्सलाम) के साथ आसमान से दुन्या में उतारा गया, और ये कह दिया गया कि तुम और तुम्हारी औलाद जब तक एक अल्लाह को मानती रहेगी, उस की इबादत करती रहेगी, और उसके बताए हुए तरीके पर चलती रहेगी, उस वक्त तक कामयाब होती रहेगी, और जब जब वो इस रास्ते से हटेगी, अल्लाह के अलावा दूसरों को पूजने लगेगी तो उसका ठिकाना जहन्नम होगा।

शैतान जो इंसान का हमेशा का दुश्मन है, उसने अल्लाह से पहले ही इजाज़त ले ली है कि मैं इंसान को बहकाऊंगा और उसको गलत रास्ते पर डालने की हर संभव कोशिश करूँगा। अल्लाह ने फरमाया कि जा ! अपना सब उपाय कर, लेकिन मेरे खास बंदों पर तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, उस दिन से शैतान की सब से बड़ी कोशिश यही है कि इंसान को शिर्क में लिप्त कर के एक अल्लाह की बंदगी से हटा दे, इसलिए कि यही इंसान की सब से बड़ी गुमराही है कि वो अपने पैदा करने वाले को भूल जाए, और शिर्क व कुफ्र में लिप्त हो कर उसके नतीजे में हमेशा हमेश के लिए जहन्नम की भस्म बने।

अल्लाह का इंसान पर ये बड़ा फज्ल है कि उसने हमेशा बंदों को सही रास्ते पर लाने के लिए और एक अल्लाह की बंदगी में दाखिल करने के लिए हर दौर में पैगंबर भेजे, हर पैगंबर की दावत यही थी–

अनुवादः– *''उस एक अल्लाह के अलावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं।''*

(अल–अराफः 59)

उन पैगंबरों में सबसे आखिरी और सब से अफजल (बेहतर) पैगंबर हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सारी दुन्या के लिए और कयामत तक के लिए भेजा गया, जिस वक्त आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तशरीफ लाए, उस वक्त मक्के के मुशरिक एक अल्लाह को तो मानते थे लेकिन उसके साथ सैकड़ों खुदाओं को शरीक करते थे, उनके लिए बंदगी वाले कर्म करते, और नज्र व नियाज करते, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हर शिर्क को नकारा, और इसको सब से बड़ा गुनाह करार दिया, और कुरआन मजीद में साफ साफ एलान कर दिया गया।

अनुवादः– *''अल्लाह इसको माफ नहीं करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और इसके अलावा जिस को चाहेगा माफ कर देगा।''*

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पैगंबर बना कर भेजे जाने का अस्ल मकसद तौहीद (एकेश्वरवाद) की तरफ बुलाना था और तौहीद (एकेश्वरवाद) के बारे में गलतफहमियों को दूर करना था, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने किसी जमाने में शिर्क के साथ समझौता गवारा न किया, मक्के के मुशरिक कहते थे कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारे उपास्यों को नकारना छोड़ दें तो हमारी सारी दुश्मनी खत्म हो जाएगी, हम आपकी हर बात मानने को तैयार हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक क्षण के लिए भी इसमें संकोच नहीं किया और सारी जिन्दगी तौहीद (एकेश्वरवाद) की हकीकत बयान करते रहे।

शेष पृष्ठ ...24...पर

हुज़ूर सल्ल0 की जीवनी एक मुकम्मल आदर्श

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

—हिन्दी अनुवादः जमाल अहमद नदवी

सीरतुन्नबी के जल्सों का मक़सदः—

हुज़ूर अकरम सल्ल0 की सीरते तय्यिबा (जीवनी) को याद करना उनके कुछ हालात सुनना और उस पर अमल करने का इरादा करना, एक अज़ीम मक़सद है, ऐसे तो सीरत पाक के नाम से बड़ी—बड़ी महफिलें सजाई जाती हैं, लेकिन देखा यह गया है कि इन महफिलों में शिरकत के बाद भी हमारी ज़िन्दगी के अन्दर कोई खास सुधार और कोई ऐसी विशेष बात नहीं दिखाई देती जिसका श्रेय इस महफिल को दिया जाय, ज़िन्दगी का जो मेयार पहले था और जिस तरह की दिनचर्या में हम पहले जी रहे थे इन जैसी बेशुमार महफिलों में शरीक होने के बाद भी हम आज उसी बेहिसी के साथ ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं और मानो हमने यह तय कर रखा है कि हम इसी तरह ज़िन्दगी के दिन गुज़ारेंगे।

नेक कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की भावनाः—

अल्लाह के रसूल सल्ल0 अलैहि व सल्लम ने फरमायाः नेक कामों की ओर आगे बढ़ो, इसलिए कि वह ज़माना जल्द आने वाला है जब रात के अंधेरों की तरह यह तारीक फितने तुम को हर ओर से घेर लेंगे, और फितनों में आदमी को यह याद नहीं रह जायेगा कि मुसलमान है या मुसलमान नहीं, अगर वह मुसलमान है तो उसके इस्लाम की मान्यतायें क्या हैं, उसको जीवन किस तरह बसर करना चाहिए, शरीअत के साथ उसका क्या तअ़ल्लुक़ होना चाहिए अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह सल्ल0 की सुन्नत के साथ उसका क्या रवय्या होना चाहिए, उसको कुछ याद न रह जायेगा, सुब्ह होते होते उसके ख्यालात बदल जायेंगे और वह अपने आपको गैर इस्लामी समाज का एक फर्द समझने लगेगा, लेकिन फितने इतने तारीक़ और गहरे होंगे कि शाम होते होते उसके ख्यालात में फिर तब्दीली आ जायेगी और वह इस्लामी ख्यालात में बदल जायेंगे। रसूलुल्लाह सल्ल0 से महब्बत और आपकी इताअ़त का जो तअ़ल्लुक़ है वह इतना कमज़ोर पड़ जायेगा कि उसको समझ में न आयेगा कि वह मुसलमान है या गैर मुस्लिम जब ऐसे फितने आयें तो इन फितनों के आने से पहले और उनके जाल में फंसने से पहले तुम नेक कामों में जल्दी करो, क्योंकि यही नेक काम अल्लाह के यहां कामयाबी, और हुज़ूर सल्ल0 से महब्बत का जरीया हैं।

मुस्लिम समाज और दीन की दावतः—

आप अपनी ज़िन्दगी का अध्ययन कीजिए आप देखिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फरमान के मुताबिक हम कहां हैं? क्या

हम नेक कामों से अपनी ज़िन्दगी संवार रहे हैं? हमारी ज़िन्दगी के अन्दर वह भलाई मौजूद है जिसकी जमानत इस्लाम ने ली है? इस्लाम से अगर हमारा अमली रिश्ता मज़बूत है तो कोई वजह नहीं कि वह खैर हमारे अन्दर मौजूद न हो जिस का ज़िक्र कुर्आन में किया गया है।

अनुवादः— अल्लाह ने तुमको खैर उम्मत बनाया जो लोगों के लिए पैदा की गयी, तुम अच्छी बातों का हुक्म दो, और बुरी बातों से रोको और अल्लाह पर पूरा ईमान रखो। तुम खैर उम्मत तो उस वक्त थे जब उन लोगों को जो बुरे रास्तों पर खड़े थे, नेकियों की ओर बुलाते थे नेक काम की दावत देते थे और उनको बताते थे कि यह रास्ता तुम्हारी कामयाबी का नहीं है ये टेढ़ा रास्ता है जो तुम्हें कहीं ले जा कर औंधे मुँह गिरायेगा।

जब तक तुम यह करते रहे खैर उम्मत थे, और यही वह नेक काम था जो इस उम्मत के सुपुर्द किया गया।

इबादत का सही तरीक़ाः—

अल्लाह की इबादत ऐसी करना कि मानो तुम अल्लाह को देख रहे हो और अल्लाह तुम को देख रहे हैं, जिसकी इबादत की जाती है अगर वह देख रहा है और तुम उसको देख रहे हो तो वह इबादत कितनी अच्छी और कितनी मिसाली होगी? हम दिन रात यह देखते रहते हैं कि घर का मुलाज़िम सामने किस तरह काम करता है और मौजूद न रहने पर किस तरह काम करता है सामने वह काम अपने मालिक को खुश करने के लिए करता है ताकि मालिक खुश हो कर उसके मासिक पे में बढ़ोत्तरी कर दे और सहूलतों में इज़ाफा कर दे। इसलिए इबादत इस प्रकार करो कि मानो तुम अल्लाह को देख रहे हो, अगर यह एहसास न पैदा कर सको तो यह कोशिश करो कि अल्लाह तुम्हें देख रहा है जब यह एहसास पैदा हो जाएगा तो सोचो वह इबादत कितनी शानदार और जानदार होगी, इस एहसास के बिना इबादत भला कैसी होगी आप खुद सोच सकते हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी बना कर भेजे जाने का अहम मकसदः—

हुजूर सल्ल0 की पूरी ज़िन्दगी खुली किताब की तरह है हम उनके तमाम मुआमलात, आपकी जिन्दगी के रात—दिन के हालात को पढ़ कर सुन कर हम अपनी ज़िन्दगी को संवारने के लिए क़दम बढ़ा सकते हैं, अगर हम अपने ईमान में सच्चे हैं और महब्बते रसूल का दावा करते हैं तो हमें भी अपने अख्लाक को सुधारना और बलन्द करने की फिक्र करना चाहिए आप सल्ल0 ने खुद अपने भेजे जाने का मकसद हदीस में बयान किया है कि मैं तो दुन्या में इसलिए भेजा गया हूँ ताकि अख़लाक का मेयार बलन्द करके लोगों को दिखाऊँ, ताकि एक सच्चा पक्का मुसलमान इसी को अख़लाक़ का मापदण्ड समझे और बरते।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत हम से क्या चाहती है:–

रसूलुल्लाह सल्ल0 की महब्बत हमसे मुतालबा करती है कि हम आपके एक एक फरमान को अपने ऊपर लागू करते, और किसी भी छोटे से छोटे फरमान को हम न छोड़ते, न गफलत बरतते और यह मुम्किन भी न होता, सच्ची महब्बत यह है कि एक एक फरमान हमारे सामने रहे, हमारे ज़ेहन दिमाग़ से ओझल न हो दूसरे लोग हमको देख कर नसीहत हासिल करें, ईमान ताज़ा करें, और आरजू करें कि ऐ काश हमारी भी ज़िन्दगी ऐसी हो जाये, हमको देख कर लोगों की आँखें ठण्ड़ी हों कि अल्लाह का सच्चा बन्दा दिखाई दे रहा है। हमारी ज़िन्दगी ऐसी नहीं होनी चाहिए कि लोग नफ़रत भरी निगाह से देखें और कहें कि देखो वह झूठा आ रहा है, बेईमान आ रहा है, झगड़ालू आ रहा है। हम जिस माहौल में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं उसका तकाज़ा यह है कि हम लोगों के सामने सच्ची इस्लामी ज़िन्दगी का नमूना पेश करते लेकिन आज हमारा हाल इसके विपरीत है हम वह नमूना पेश कर रहे हैं जिसकी वजह से लोग इस्लाम से नफ़रत करने लगें और कहें कि अब इस्लाम इस क़ाबिल नहीं की चल सके, क्योंकि उसकी ज़िन्दा मिसाल मुसलमानों की शक्लों में मौजूद है। अगर इस्लाम के अन्दर ताक़त होती, और अगर इस्लाम अल्लाह का सच्चा दीन होता तो मुसलमान आज इस बेचारगी और पस्ती में मुब्तला न होते। लेकिन इस्लाम से हमारा जुड़ाव नाम मात्र का रह गया है, काम का नहीं, जब कभी ज़रूरत पड़ती है तो हम कह देते हैं कि हम मुसलमान हैं और जहां देखते हैं कि यहां मुसलमान कहना मुनासिब नहीं है वहां हम रुख फेर लेते हैं जनगणना के खाने में अपने आपको मुसलमान लिखवाते हैं इसलिए कि हमारे पूर्वज सब मुसलमान चले आ रहे हैं अब यहां कैसे गैर मुस्लिम लिखवाएं। इसलिए हमें चाहिए कि हम जिस्म, जान, सीरत, बातचीत, अमल किरदार, मुआमलात हर पहलू से मुकम्मल इस्लाम में दाखिल हो जायें, और इस्लाम के सच्चे वफ़ादार सिपाही बन कर हुजूर सल्ल0 के तरीके को अपने जीवन में लागू करलें तो आज भी सारी दुन्या हमारे क़दमों में आ जाये। आज दुन्या को ऐसे इन्सानों की तलाश है जिनके अन्दर हक हो, सच्चाई हो, न्याय हो, जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीने का हुनर रखते हों। इस्लाम तो एक ख़ैर ख्वाही का दीन है। एक मुसलमान को अपने समाज और मुआशरे के लिए वही चीज़ें, वही इज़्ज़त, वही कामयाबी पसन्द होनी चाहिए जो अपने लिए पसन्द करे, यह जज़बा नहीं होना चाहिए कि हर खैर, हर भलाई, हर तरक्की, बस हमारे और हमारे परिजनों के हक में आये और समस्त लोग और दुन्या जहां चाहे जाये हमसे क्या मतलब? यह कोई मुसलमान कह सकता है? अगर किसी के

अन्दर यह ख़्याल आता है तो उसे अपने ईमान को फिर से चेक करने की ज़रूरत है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम गौर करें कि हमारे अन्दर कौन–कौन सी बातें हैं जो इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ हैं और कौन कौन सी बातें हैं जिनका इस्लामी तालीमात से कोई दूर दूर का भी रिशता नहीं है। इसलिए ज़रूरी है कि हमारा मुकम्मल जीवन हुजूर के नक्शे क़दम पर हो, कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसकी आदमी को ज़रूरत हो और वह आप सल्ल0 की ज़िन्दगी में मौजूद न हो। हमें चाहिए कि हम खुद अल्लाह के रसूल सल्ल0 के तरीके की पैरवी करें और अपने माहौल और समाज को अच्छा बनाने के लिए जो कोशिश कर सकते हों करें, इस मुल्क में मुसलमान इतनी बड़ी तादाद में हैं अगर वह सब मिल कर कोई ठोस फैसला कर लें तो वह पूरे मुल्क को इस्लाम की तालीमात से वाकिफ करा सकते हैं इस्लाम तो वह दौलत है जिसके ज़रीये हम मुल्क ही नहीं पूरी दुन्या को इस्लाम की रौशनी में ला सकते हैं, जितनी परेशानियां आज दुन्या के अन्दर हैं चाहे वह समाजी हों या सियासी व्यक्तिगत हों या सामूहिक, आर्थिक हों या किसी और प्रकार की, हम इन तमाम परेशानियों का हल इस्लामी तालीमात की रौशनी में दुन्या के सामने पेश कर सकते हैं और अपने मुल्क के साथ साथ पूरी दुन्या को अम्न व शान्ति का गहवारा बना सकते हैं।

❖❖❖

इस्लामी अक़ीदे.....

खुद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी पाक जात के बारे में ये आशंका हुई कि कहीं उम्मत आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को उसी तरह खुदाई का दर्जा न दे दे जिस तरह ईसाईयों ने हजरत ईसा (अलैहिस्सलाम) के साथ किया, तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खुल्लम खुल्ला ये बात फरमाई।

अनुवादः– *''मुझे उस तरह आगे न बढ़ाओ जिस तरह ईसाईयों ने ईसा बिन मरियम के साथ किया, निश्चित रूप से मैं अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ, तो तुम कहो ''अल्लाह के बंदे और उसके रसूल''।*

और दुन्या से रुख़सत होने से पहले आपकी मुबारक जबान से ये शब्द जारी हुए।

अनुवादः– *'अल्लाह तआला यहूदियों और ईसाईयों पर लानत (धिक्कार) करे, उन्हों ने अपने पैगंबरों की कब्रों को सज्दा करने की जगह बना लिया''।*

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने किस तरह तौहीद (एकेश्वरवाद) को साफ साफ बयान किया ?इसके लिए मक्के के मुशरिकों के अकीदे को समझना होगा, और उनके शिर्क के प्रकार को जानना पड़ेगा, जिसकी आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सुधार की, फिर कुरआन मजीद और हदीसों की रौशनी में तौहीद (एकेश्वरवाद) की हकीकत स्पष्ट होगी।

❖❖❖

सम्पादक ''सच्चा राही'' अल्लाह के हुज़ूर में

नवतुल उलमा अपने एक निष्ठावान, प्रतिबद्ध कारकुन से महरूम

—जमाल अहमद नदवी

अपने प्रिय पाठकों को बेहद दुखद ख़बर देते हुए दिल गमों से निढाल है कि सच्चा राही जब अपना बीसवाँ वर्ष मुकम्मल कर रहा है उसके प्रथम सम्पादक ''डॉ0 हाफिज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी'' दिनांक 6 दिसम्बर, 2021 (1 जमादिल ऊला, 1443 हिजरी) दिन सोमवार को लम्बी बीमारी के बाद रात दो बजे अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिले ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''।

एक रोज़ पहले 5 दिसम्बर को फज्र की नमाज़ के बाद उप सम्पादक सच्चा राही ने बताया कि डॉ0 साहब की तबीयत ज़ियादा खराब है, और घर वाले फहमीना हास्पिटल लेकर गये हैं, उनके पोते अब्दुल करीम नदवी को फोन किया फोन रिसीव न हुआ बाद में काल आई और मालूम हुआ कि तबीअत ठीक नहीं है, आई0सी0यू0 में वेन्टीलेटर पर हैं, दिल में फौरन ख्याल आया कि हम छोटों का सरपरस्त अपने अस्ली घर की ओर रवाँ दवाँ है और आस टूटती नज़र आई। फिर शाम को मालूम हुआ कि डॉक्टरों ने वृद्धावस्था और हालत नाजुक होने की बिना पर निराशा जताई और घर ले जाने का मशवरा दिया, डॉक्टरों की बात मानते हुए न चाह कर भी घर वाले दिल पर पत्थर रख कर घर ले आये लेकिन देख रेख में कोई कमी न होने दी, ध्यान पूर्वक सभी सेवा में लगे रहे रात 9:30 बजे मैं मुलाक़ात के लिए घर पहुंचा देखा कि हालत नाजुक है, आक्सीमीटर लगा है। और उनके दोनों बेटे और पोते सब तीमारदारी में जी जान लगाये हुए हैं, संदेह अब यक़ीन में बदलने लगा लेकिन यकीन से अब भी कुछ नहीं कहा जा सकता था, रात 10 बजे के क़रीब बोझल मन से वापस घर लौट आया, बिस्तर पर लेटा लेकिन खटका लगा रहा, नमाज़ के लिए आँख खुली तैयार हो कर मस्जिद गया नमाज़ के बाद जैसे ही यह एलान हुआ कि नदवे का एक मुख्लिस सेवक और मासिक सच्चा राही का सम्पादक अब दुन्या में न रहा, दिल बेकाबू हो गया और इन्नालिल्लाहि व इन्नाइलैहि राजिऊन पढ़ी और दुखी मन से मौलाना अनीस अहमद नदवी के साथ उनके घर आखिरी दीदार और सांत्वना देने पहुंचा और एक एक करके उनके परिजनों से मुलाकात हुई सब अपनी आँखों में आँसुओं का समन्दर लिये सब्र करते हुए एक टक उस मर्दे मुजाहिद को देखते रहे जिसने कभी भी पीछे मुड़ कर नहीं देखा, और कभी भी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया, असातिज़ा व कारकुनान में से जिसने भी यह ख़बर सुनी वह उनके घर की ओर संवेदना व्यक्त करने पहुँचता रहा, अभी हम लोग वहां मौजूद थे कि एक बड़ी तादाद स्टाफ के लोगों की आ गई, हाफिज़ मिस्बाहुद्दीन

साहब ने आते ही आने जाने वालों के बैठने का नज़्म किया और मेहमानख़ाने से कुर्सियां मंगवाईं और कफन दफ़न, नहलाने, क़ब्र की खुदाई और तमाम कामों पर मशवरा करके काम को आसान बनाया, अल्लाह जज़ाये ख़ैर अता फरमाये। आमीन।

थोड़ी देर बाद उनके दूर, करीब के रिशतेदारों और शुभचिंतकों की आमद भी शुरु हो गयी, सम्भवतः 11 बजे जब नहलाने के लिए शिफा खाने ले गये तो नाज़िम नदवतुल उलमा व सदर आल इण्डिया मुस्लिम प्रस्नल्ला बोर्ड अपनी कमज़ोरी के बावजूद स्वयं परिजनों को सांत्वना देने तशरीफ लाये और सबको सब्र की तलक़ीन की, नहलाने के बाद आख़री दीदार करने वालों का तांता बंध गया, क्योंकि जुहर के बाद जनाज़े का एलान था, हर एक बस आख़िरी दीदार के लिए चला आ रहा था।

मरहूम डॉ0 साहब एक बुद्धजीवी, माहिर सहाफ़ी उर्दू, हिन्दी, अरबी ज़बानों के बड़े विद्वान थे। रिसर्च उनके मिज़ाज में दाख़िल था कोई बात बिना दलील के कबूल न करते थे, उनकी ज़िन्दगी का पल–पल शिक्षा–दीक्षा, तब्लीग़ दावत, समाज सुधार और अकीदों की इस्लाह में गुज़रा।

उनका जन्म 11 अगस्त 1933 ई0 को पूरे रज़ा खाँ, डाकखाना सरैठा ज़िला बाराबंकी (अब यह मौजा फैजाबाद/ अयोध्या में है) में हुआ। उनके वालिद का नाम मो0 इस्हाक़ था और वह पुशतैनी काश्तकार थे।

डॉ0 साहब ने ऐसे घराने और ऐसे गाँव में आँखें खोलीं जहां दीन के नाम पर सिर्फ़ रुसूम रिवाज के अलावा कुछ न था दीनी शिक्षा से सभी दूर थे डॉ0 साहब स्वयं बताते थे कि जब मैंने होश संभाला तो वालिद साहब को फातिहा, दरूद, मीलाद, ताज़ियादारी करते हुए पाया, लेकिन आज डॉ0 की मेहनतों से उनका पूरा कुंबा दीनदार है और पूरे इलाक़े पर उनकी अच्छी छाप है।

डॉ0 साहब ने प्राइमरी की शिक्षा अपने गाँव के करीबी स्कूल में और मिडिल तक की शिक्षा रुदौली मिडिल स्कूल जिला बाराबंकी में प्राप्त की 1948 ई0 में मिडिल पास किया, मिडिल पास करने के बाद बहुत दिनों तक गांव के नौजवानों को फ्री शिक्षा देते रहे। 1953 में मदरसा अहमदिया अलीयाबाद बाराबंकी में तीस रूपया मासिक वेतन पर शिक्षक नियुक्त हुए और कई वर्षों तक वहां कार्यरत रहे। यहीं पर उन्होंने कारी मुशताक साहब मलीहाबादी की निगरानी में हिफ़्ज़ किया। यहीं के एक जल्से में हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 और मौलाना मंजूर नोमानी रह0 से मुलाकात हुई जिनसे मुतअस्सिर हो कर लखनऊ आये और अनेकों संघर्षों से गुज़रते हुए 1959 में दारुलउलूम नदवतुल उलमा से वाबस्ता हो गये और अपनी मेहनत, ईमानदारी, कार्य कुशलता, समय की पाबन्दी, काम के प्रति अपनी लगन, निष्ठा और जिम्मेदारों की नज़र में अपनी सकारात्मक सोच और भरोसेमन्दी की वजह से मुख़तलिफ शोबों के आला उहदों पर तैनात किये गये। और जिस उहदे पर भी रहे उसका पूरा हक़ अदा किया। अपने कर्तव्यों के निर्वाहन में कभी कोई समझौता नहीं

किया। जब माहद दारूल उलूम नदवतुल उलमा (जूनियर क्लासेज़) के हेड मास्टर बनाये गये तो उसके उन्नति के लिए सदेव तत्पर रहे और बच्चों को बनाने और आगे बढ़ाने में कोई कसर न छोड़ी। वह अपने टीचर्स और विद्यार्थियों से बहुत क़रीब रहते और उनकी परेशानियों को सुन कर त्वरित उनके समाधान की कोशिश करते। उनका पूरा कार्यकाल बड़ा मिसाली रहा उनके इस कार्यकाल का बखान करते आज उनके जनाज़े में शरीक होने आये दूर व करीब के नदवी फ़ारिगीन से सुना गया, जब तक माहद मेन कैंपस से सिकरोरी मुंतकिल नहीं हुआ वही हेड मास्टर रहे। डॉ0 साहब अपनी इन जिम्मेदारियों के निर्वाहन के साथ अपनी उच्च शिक्षा की ओर से गाफिल न हुए और लखनऊ में रह कर मिडिल से आगे की शिक्षा प्राप्त की, हाई स्कूल, इण्टर, बी0ए0, एम0ए0 करने के बाद पी0एच0डी0 भी किया डॉ0 साहब ने दो पी0एच0 डी0 कीं। एक जामियतुल इमाम मुहम्मद बिन सऊद रियाज़ से और दूसरी लखनऊ यूनिवर्सिटी से, इसके बाद भी डॉ0 साहब रुके नहीं बल्कि इस्लाम और दूसरे धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन जारी रखा।

पाठक सज्जनो! आप रिनंतर डॉ0 साहब के सम्पादकीय लेख के अलावा कवर पेज, उर्दू सीखिए, और गद्य, पद्य के अनेकों रचनाओं से लाभांवित होते रहे है। डॉ0 साहब जब तक स्वस्थ रहे पूर्णरूप से सच्चा राही तैयार करते रहे, जब स्वास्थ्य खराब रहने लगा तो भी अपने सहयोगियों और घर के पोतों, पोतियों यहाँ तक कि बहुओं से काम लेते रहे और एडवांस लेख तैयार रखते, दो साल से डॉ0 साहब ऑफिस नहीं आ पाते थे लेकिन घर से ही अपने दायित्वों का निर्वाहन आखिर तक करते रहे। इस के अलावा समाज सुधार के बेशुमार कार्य करते रहे और अनेकों लोगों को इसके लिए प्रेरित भी किया। डॉ0 साहब ने कई किताबें भी लिखीं हैं जैसे मुहर्रमुल हराम और ताजियादारी, जिन्नात का बयान, उर्दू, क़वायद, उर्दू पहाड़ा, गिन्ती, हिसाब, मौलाना फखरुद्दीन खयाली शख्सियत और शायरी, वगैरा, डॉ0 की पत्नी का इंतकाल 2001 में हो गया था। अल्लाह उनकी भी मग़फिरत फरमाये।

डॉ0 साहब के जनाज़े की नमाज़ नाज़िम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी, सदर आल इण्डिया मुस्लिम प्रसनललॉ बोर्ड ने पढ़ाई, उनके जनाज़े में लखनऊ और आसपास के देहात और कस्बों के सैकड़ों लोग शरीक हुए, डालीगंज कब्रिस्तान में तदफीन हुई, जहां नदवतुल उलमा के और बहुत से असातिजा व कारकुनान मदफून हैं अल्लाह उन सब की मगफिरत फरमाये, नाज़िम साहब ने उनके परिजनों से शोक संवेदना व्यक्त करते हुए इसे इदारे का न भरने वाला नुक़सान बताया, दारुल उलूम नदवतुल उलमा के प्रिंसिपल डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी ने भी अपने दुख का इज़हार किया और डॉ0 साहब को एक मेहनती, ईमानदार, संयमी, इन्सान बताया, मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी

नदवी, नाजिरे आम नदवतुल उलमा ने भी उनके अजीज़ों से संवेदना व्यक्त की और अपने दिली तअ़ल्लुक़ का इजहार किया।

उनके परिजनों में दो बेटे, मतलूब अहमद नदवी और मारूफ अहमद और एक बेटी और पौत्रों और नवासों का भरापूरा कुम्बा है।

शोब–ए–दावत व इरशाद के आफिस में सच्चा राही के उप सम्पादक मौलाना मुहम्मद गुफरान नदवी साहब की अध्यक्षता में एक शोक सभा हुई जिसमें मौलाना ने डॉ0 साहब को एक मिसाली उस्ताद और मिसाली मुरब्बी बताया, वह सादा मिज़ाज़, बात व काम के धनी इन्सान थे, वह न्याय प्रिय थे, जिस उहदे व मंसब पर रहे उसमें उन्होंने चार चाँद लगा दिये, इस सभा में मौलाना आफ़ताब आलम नदवी, मौलाना अब्दुल वकील नदवी, मौलाना अबू आमिर नदवी, मौलाना आमिर बेग नदवी, मौलाना सलमान नकवी, नियाज़ अहमद आज़मी इंचार्ज शोब–ए–सहाफत व नशरियात शरीक हुए। शोब–ए–तामीर व तरक़्की, डॉ0 साहब जिसके नायब नाजिर थे उसके समस्त सदस्य, दफ़्तर "सच्चा राही", दफ़्तर निजामत के समस्त सदस्य और नदवतुल उलमा का पूरा परिवार इस दुख और गम की घड़ी में उनके सपरिवार से शोक संवेदना व्यक्त करता है और अल्लाह के हुजूर मग़फिरत की दरख्वास्त करता है कि अल्लाह उनके गुनाहों को बख्श दे और जन्नतुल फिरदौस में बलन्द मक़ाम अता फरमाये आमीन।

प्रिय पाठको! मैं 2013 से सच्चा राही और उसके सम्पादक से जुड़ा रहा, इसी मुनासबत से मैंने कुछ लिखने की कोशिश की, जनवरी 2022 का अंक कम्पोजिंग के लिए जा चुका था कि यह हादसा पेश आ गया, सच्चा राही का यह अंक भी बिना किसी बाद्धता के समय से प्रकाशित हो रहा है जिसके लिए हमारे डॉ0 साहब अपनी बीमारी के बावजूद फिक्रमंद रहते थे, संक्षेप में लेख इस अंक में दिये जा रहे हैं, अगले अंकों में इंशाअल्लाह तफ़सीली हालात हमारे ज़िम्मेदारों उनके करीब तरीन दोस्त अहबाब, परिजनों, शागिर्दों के क़लम से आयेंगे तो आपको मालूम होगा कि वह किस प्रकार के ज्ञानी व बुद्धिजीवी थे, अल्लाह मुझे भी उनके साथ गुजारे हुए 9 सालों के एहसासात व तजरिबात पर लिखने की तौफीक़ से नवाजे।

आमीन।

❖❖❖

लोक तंत्र दिवस

लोक तंत्र का दिवस मनाओ
झण्डा ऊँचा तुम फहराओ
करके तिरंगा ऊँचा अपना
गीत क़ौम का मन से गाओ
लोक तंत्र का अर्थ बता कर
प्रेम भाव को खूब बढ़ाओ
सब को बुला कर एक मंच पर
एक रहो का सबक़ पढ़ाओ
जय कारा की धूम मचा कर
फिर सब हलवा पूड़ी खाओ
बटें मिठाई बच्चों में फिर
कुछ लड्डू घर को ले जाओ
प्यार देश से करें सभी जन
गली गली में गाने गाओ
लोकतंत्र का दिवस मनाओ
रब के अपने गुन तुम गाओ

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक व्यक्ति ने नमाज़ शुरु की, उसके बाद याद आया कि उसकी ज़बान से अस्र के फर्ज के बजाय जुहर का फ़र्ज निकल गया था, ऐसी सूरत में नमाज़ अदा हुई या नहीं?

उत्तरः दिल में अस्र की नीयत थी मगर ज़बान से जुहर का शब्द निकल गया तो उससे नमाज़ पर कोई असर नहीं पड़ेगा, अस्र की नमाज़ हो गयी, फुक़हा (धर्म शास्त्रियों) ने व्याख्या की है कि इस सिलसिले में एतबार दिल के अमल का है न कि ज़बान से निकले हुए शब्द का।

(दुर्रे मुख्तार—1/385)

प्रश्नः एक व्यक्ति ने नमाज़ शुरु की, उसके बाद याद आया अस्र के फर्ज के बजाय जुहर के फर्ज की नीयत की है, तो अब क्या करे? नमाज़ तोड़ कर फिर तकबीर—ए—तहरीमा कहे या नमाज़ ही में नीयत बदल दे, अगर नमाज़ ही में नीयत बदल सकता है तो कब बदलने का इख्तियार है?

उत्तरः अगर किसी ने बिना नीयत ही नमाज़ शुरु कर दी बाद में याद आया कि नीयत नहीं की है या गलत नीयत की, मसलन अस्र की जगह जुहर की नीयत कर ली तो अब नीयत का वक्त जाता रहा, नमाज़ शुरु करने के बाद तकबीर तहरीमा कहे फुक़हा ने इसकी सराहत की है कि नमाज़ शुरु कर देने के बाद अगर नीयत की तो उसका एतिबार नहीं है।

(दुर्रे मुख्तार—1/387)

प्रश्नः एक व्यक्ति ने नमाज़ शुरु की, नमाज़ के बीच उन की निगाह मस्जिद के क़िब्ले वाली दीवार पर पड़ी, दीवार पर कुछ कुर्आनी आयतें और कुछ हदीसें लिखी हुईं थीं, उन्होंने लिखी हुई आयतें व हदीसें दिल से पढ़ लीं और समझ लिया, तो क्या इससे नमाज़ फासिद हो जायेगी, या नहीं।

उत्तरः नमाज़ के दरमियान दीवार पर लिखी हुई चीज़ों को जान बूझ कर दिल से पढ़ना और समझना मकरूह है, जब कि नमाज़ फासिद न होगी, और अगर पढ़ने में ज़बान को हरकत दी तो यह शब्द अदा करना हुआ और इससे नमाज़ फासिद हो जायेगी और अगर बिला इरादा इत्तिफाकन लिखी हुई चीज़ों पर नज़र पड़ जाये तो यह माफ है। मगर नज़र जमाये न रखे। (दुर्रे मुखतार—1/593)

प्रश्नः अगर कोई नमाज़ी जिस्म पर बिला ज़रूरत हाथ फेरता रहे और कपड़ों को दुरुस्त करता रहे तो यह क्या है?

उत्तरः नमाज़ बहुत ही ध्यान और तवज्जोह से पढ़नी चाहिए बिला ज़रूरत बदन खुजलाना, बदन पर हाथ फेरते रहना या कपड़ों से खेलना मकरूह तहरीमी है, हदीस शरीफ में इसकी मनाही आई है, अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया है कि अल्लाह तआला तीन चीज़ों को पसंद नहीं फरमाता है— (1) नमाज़ में खेलना। (2) रोज़े में गाली गलोज करना। (3) क़ब्रिस्तान में हँसना, इसी रिवायत की बिना पर फुकहा ने सराहत की है कि यह मकरूह तहरीमी हैं।

(दुर्रे मुखतार—1/599)

शेष पृष्ठ.....34..पर...

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

निकाह के सही होने के लिए हुकूक अदा कर सकने का पहले से इत्मीनान लाजिमी शर्त नहीं:–

क्योंकि हर व्यक्ति अपने हालात और मिजाज व स्वभाव को खुद जितना जानता या जान सकता है कोई दूसरा इस का पूरा अंदाजा भी नहीं कर सकता इसलिए शरीयत ने हर एक को अल्लाह के पास जवाबदेह होने का एहसास दे कर उसी पर जिम्मेदारी डाल दी है कि वो ख़ुद अपने हालात की समीक्षा करके निकाह करने या न करने का फैसला आख़िरत की जवाबदेही को सामने रख कर करे, इसीलिए शायद शरीयत में निकाह के वक़्त खुत्बा रखा गया है जिसमें पति को खासतौर पर नसीहतें की जाती हैं और अल्लाह के ख़ौफ का एहसास ताज़ा किया जाता है खुत्बे में कुरआन मजीद की जिन तीन आयतों का पढ़ना सुन्नत है उन सब में "इत्तकुल्लाह" (अल्लाह से डरो) की बात मौजूद है इसलिए अपनी तरफ से इस किस्म की "सामर्थ्य या इत्मीनान" को शर्त क़रार नहीं दिया कि जिसके न होने से निकाह के सही होने पर कोई असर पड़े। यहीं से यह समझा जा सकता है कि इस्लामी शरीयत की व्याख्या करने वालों ने दूसरे निकाह से पहले "बीवियों के दरम्यान इंसाफ़" के पहले से इत्मीनान को ऐसी शर्त क्यों नहीं करार दिया कि जिसके हासिल किये बिना निकाह ही सही न हो बल्कि साफ कह दिया कि इस इत्मीनान के हासिल हुए बिना भी निकाह बिलकुल सही हो जाता है (क्यों कि ऐसा भी देखा गया है कि शादी से पहले एक व्यक्ति के बारे में अच्छा गुमान नहीं था मगर शादी के बाद उसके हालात बिल्कुल बदल गये और वो बेहतरीन पति साबित हुआ।

पूरी बात का खुलासा ये है कि इस आयत का ये मतलब किसी ने आज तक नहीं लिया कि "जो कोई इंसाफ न कर सकने का खतरा महसूस करता हो वो एक से ज़ियादा औरत से निकाह न करे बल्कि इस खतरे के बावजूद एक से ज़ियादा औरत से निकाह करने की इजाज़त है इस पर सारे उलमा का इत्तेफाक है। (यानी निकाह सही होगा) यहाँ एक बात और काबिले गौर है कि अगर तुम्हें खौफ हो कि तुम इंसाफ न कर सकोगे तो एक ही से शादी करो" बयान की गयी शर्त को निकाह के सही होने के लिए जरूरी करार दिया जाए तो इसका मतलब यह होगा कि जब इंसाफ न कर सकने का खतरा हो तभी एक औरत से शादी करना सही होगा वरना कम से कम दो औरतों से निकाह करना जरूरी होगा जाहिर है कि इस आयत का ये मतलब लेना किसी के नज़दीक भी सही नहीं होगा।

इंसाफ न करने की वजह से अलग हो जाने का अधिकारः–

हां ! निकाह कर लेने के बाद पति ने अगर किसी बीवी चाहे पहली हो या दूसरी के साथ जरूरी हुकूक अदा नहीं किये बल्कि उस पर जुल्म किया या बीवियों के बीच ज़रूरी बराबरी नहीं बरती तो इस

क़िस्म की वाकई शिकायतें पाए जाने की शक्ल में मजलूम बीवी को ये हक होगा कि वो पति से छुटकारा हासिल कर ले और शरीयत ने ऐसी औरत को पूरा अवसर दिया है जिस का पति न तो हुकूक अदा करता है और न तलाक ही देने पर तैयार होता है कि वो अदालत जाये। अतः काज़ी जैसे ही क़ानून के तकाजों के अनुसार पूरा इत्मीनान हासिल कर चुकेगा और शरीयत की तरफ से इस बारे में जो खास एहतियाती और जरूरी शर्तें लगायी गयी हैं उनके पाए जाने का भी सबूत मिल जाएगा वैसे ही वो निकाह फस्ख (तोड़)देगा

यहाँ उलमा के विस्तृत बातें और सबूत पेश करने के बजाय सिर्फ एक दूरदर्शी मालिकी आलिम ''इब्नुल अरबी'' (रह०) का संक्षिप्त वाक्यांश के उल्लेख पर बस किया जाता है। फरमाते हैं :–

जब पति की तरफ़ से दुर्व्यवहार का प्रदर्शन हो तो अलगाव कर दी जाए।''

(अहकामुल कुरआन)

इन विवरण के सामने आ जाने के बाद कुछ गिरोहों की तरफ़ से की जाने वाली ये मांग बिल्कुल निरर्थक हो जाता है कि ''दूसरा निकाह कर लेने से ही पहली बीवी को निकाह फस्ख करने (तोड़ने) का अधिकार दे दिया जाए'' सिर्फ इस वहम की बुन्याद पर कि ये व्यक्ति जिस ने दूसरा निकाह कर लिया है ज़रूर नाइंसाफी करेगा जब कि व्यावहारिक बुद्धि के अनुसार भी हर व्यक्ति के बारे में पहले ही से ऐसा फैसला कर लेना हास्यास्पद बिल्कुल अनुचित और नासमझी की बात है क्योंकि ऐसा भी हो सकता है कि ये व्यक्ति पहले से भी ज़ियादा अपनी पहली बीवी का ख्याल रखने लगे इसलिए शरीयत सिर्फ दूसरा निकाह कर लेने से उस व्यक्ति को अपराधी करार नहीं देती और जाहिर है कि जुर्म से पहले सजा देना कैसे सही हो सकता है।

अद्ल किसे कहते हैं :–

ऊपर क्योंकि बार बार अद्ल का शब्द आया है इसलिए मुनासिब मालूम होता है कि इसको स्पष्ट कर दिया जाए और बता दिया जाए कि शरीयत के माहिर लोगों ने अद्ल के क्या अर्थ (कुरआन व हदीस से ले कर) बयान किये हैं।

छठी सदी हिजरी के मशहूर हनफी फकीह मलिकुल उलमा अलाउद्दीन कासानी (रह०) ने कई बीवियों के दरिम्यान ''अद्ल'' करने की तफ़्सील बयान करते हुए लिखा हैः–

अगर किसी व्यक्ति की एक से ज़ियादा बीवियां हैं तो उसके जिम्मे ज़रूरी है कि उन सब के अधिकार समान रूप से दे यानी जरूरी खर्चों का बोझ उठाये लिबास मकान और रात गुज़ारने में समानता बरते, इसी बराबरी का नाम ''अद्ल'' है अगर उसके पास दो बीवियां हैं तो उन दोनों के दरिम्यान खाने पीने मकान और उनके साथ रात गुज़ारने में भी बिल्कुल बराबरी का बर्ताव करे (किसी को वरीयता न दे)'' ।

खासतौर पर फिक़्ह हनफी में अद्ल और समानता बरतने के मामले में ज़ियादा पाबंदियां हैं कि दोनों बीवियों के अंदर ऐसे गुणों का स्पष्ट अंतर जो आमतौर पर वरीयता का कारण हुआ करता है जैसे सुंदरता में अंतर, कुंवारी और विधवा का अंतर, जवान और बूढी का अंतर, इसे भी वरीयता

और उनके बीच रात गुज़ारने वगैरह में भेदभाव व फर्क करने के लिए औचित्य करार नहीं दिया गया जैसा कि यही अल्लामा कासानी आगे लिखते हैं :–

''मतलब ये है कि जब दोनों बीवियों से सम्बन्ध और अच्छा सुलूक का शरई कारण एक ही है यानी निकाह तो दोनों के साथ बर्ताव भी एक जैसा करना जरूरी और अनिवार्य होगा जाहिर है इस कारण में कुंवारी और शादीशुदा, बूढ़ी और जवान, पुरानी और नई अतः हर तरह की बीवी बराबर है तो बर्ताव भी समान ही होना चाहिए। (इसलिए बर्ताव में फर्क़ का औचित्य नहीं)।

लेकिन ये बराबरी का हुक्म व्यावहारिक सीमा तक सीमित है, रहा हार्दिक सम्बन्ध और दिल के झुकाओ का मामला तो इस बारे में शरीयत ने कोई पाबन्दी नहीं लगायी और पाबन्दी लगाना प्रकृति के खिलाफ भी होता क्योंकि ''दिल'' और ''मिजाज'' पर किसी का अधिकार नहीं हुआ करता और अल्लाह तआला किसी ऐसी बात का हुक्म नहीं देता जो इंसान की सामर्थ और ताकत से बाहर हो।''

(सूरः बकरह–286)

इस नियम से ये गुंजाईश निकली कि अगर किसी बीवी से हार्दिक सम्बन्ध ज़ियादा हो (बशर्ते कि उस के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार न करता हो) तो अल्लाह तआला सिर्फ़ इतनी बात पर पकड़ नहीं करेगा इस बुन्यादी मार्गदर्शन के अलावा सूरः निसा में साफतौर पर (इंसान की ये कमज़ोरी बयान करके) कह दिया गया है :–

अगर तुम चाहो भी तो हर बीवी के साथ समान हार्दिक सम्बन्ध नहीं रख सकते (क्योंकि स्वाभाविक रूप से ऐसा संभव नहीं)।

(सूरः निसा–129)

लेहाजा इस बात पर पकड़ भी नहीं, हाँ! किसी बीवी की तरफ़ ऐसा ज़ियादा झुकाव न होने पाए कि दूसरी बीवी के साथ वैवाहिक सम्बन्ध निबाहने और उसके हुकूक अदा करने का कभी ख़याल न रहे और उस बेचारी को बिल्कुल यूँही लटका हुआ छोड़ दिया जाए।

हदीस में आता है कि नबी–ए–अकरम (स०) व्यवहारिक रूप से सारी बीवियों के साथ बिल्कुल समान बर्ताव करते थे मगर क्योंकि हार्दिक सम्बन्ध हजरत आइशा रजि० से ज़ियादा था इसलिए माफी मांगने के अंदाज में कहा करते थे !

ऐ अल्लाह! जितना मेरे बस में था मैंने बराबरी का मामला किया लेकिन जो बात मेरी ताकत से बाहर है (यानी दिली झुकाव) उस पर मुझे मलामत न करना (और पकड़ न करना)।

हाँ! जिन मामलात में अधिकार हो उन में भेद भाव करने और किसी एक के साथ बुरा बर्ताव करने को हदीसों में बुरा कहा गया और धमकी भी दी गयी है एक हदीस में नबी–ए–अकरम (स०) का ये इरशाद आया है :–

क़यामत के दिन बीवियों के बीच इंसाफ न करने वाला इस हाल में आयेगा कि उसका एक पहलू लटका हुआ होगा। (और उस व्यक्ति की रुस्वाई व जिल्लत का तमाशा हर एक देख रहा होगा।

❖❖❖

आह! डॉक्टर साहब

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

बात लगभग 2008 की है जब हम दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ में आलमियत का सबक पढ़ रहे थे। उन्हीं दिनों हमने एक लेख ''मानवता की अर्थी'' के विषय पर लिखा और मजलिसे सहाफत व नशरियात से प्रकाशित होने वाले ''सच्चा राही'' पत्रिका में छपने के लिए भेज दिया। संयोगवश वह छप भी गया, अब मेरी तलाश हुई कि ये कौन लड़का है जो हिन्दी में लिख लेता है, आखिरकार मैं मौलाना गुफरान नदवी सहायक संपादक ''सच्चा राही'' के हत्थे चढ़ा और वह हमें लेकर ''सच्चा राही'' के एडिटर डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी के यहां गये। वहां उन्होंने मेरी बड़ी हौसला अफज़ाई की, एक अदना गाँव से आये हुए लड़के की यूं हौसला अफज़ाई बड़ी बात थी। उन्होंने मुझे निरन्तर लेख लिखने का आदेश दिया, जिसे मैं सामान्यतः पूरा करता, मगर नौजवानी की उम्र में लापरवाही भी साथ चिपकी रहती है, तो कभी कभी ग़ायब रहता। फोन करके वह बुलाते और लेख लिखने को कहते एक दो दिन में लिख कर उन्हें सौंप देता।

कुछ माह गुज़रे की 2009 में आलमियत की डिग्री का अर्ह हुआ और अपने गुरू उस्ताद मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी के द्वारा स्थापित अल–आफिया में रिसर्च स्कॉलर के रूप में कार्य करने लगा, वहां मौलाना अब्दुल्लाह साहब की रहनुमाई में मेरी कई किताबें प्रकाशित हुई। मगर डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी से सम्बन्ध बना रहा और सच्चा राही में निरन्तर लेख लिखता रहा। लगभग एक साल बाद उन्होंने ''सच्चा राही'' के प्रूफरीडिंग की ज़िम्मेदारी मुझे सौंप दी और एक सांकेतिक वेतन नदवा मैनेजमेंट की तरफ से दिला दिया। उन्हीं दिनों ''सच्चा राही'' के दो सहायक सम्पादक की मृत्यु हो गई तो नदवा मैंनेजमेंट के सामने मुझे ''सच्चा राही'' से संलगन होने की मेरे गुरु मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0 और डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी ने सिफारिश की मगर किन्ही कारणों से यथास्थिति बनाए रखने पर सहमति बनी। मगर मेरा लेख निरन्तर सच्चा राही में छपता रहा और डॉ0 हारून साहब की दुआएं हमें मिलती रहीं।

कुछ अरसे बाद पढ़ाई और घरेलू जिम्मेदारियों के कारण लखनऊ छोड़ना पड़ा, मगर डॉ0 साहब और मौलाना गुफ़रान नदवी साहब से निरन्तर सम्पर्क रहा। अब मैं लेख कम लिखने लगा था, जिस पर डॉ0 साहब फोन के ज़रिये शिकायत दर्ज कराते, आखिरी सालों में उनकी सुनने व देखने की क्षमता प्रभावित हो गई थी मगर फिर भी मौलाना जुबैर नदवी और मौलाना जमाल अहमद नदवी से मेरे बारे में खैर खैरियत पूछते रहते।

डॉ0 साहब में गज़ब की ऊर्जा थी, आखें कमज़ोर हो गईं थीं मगर इशारे से अपने लेख कागज़ पर उकेरते। उन्होंने लीक से हट कर देवनागरी लिपि में शुद्ध उर्दू उच्चारण लिखने का माहौल बनाने की कोशिश की। डॉ0 साहब ने समाज सुधार विषयक पर अत्यधिक लेख लिखा बल्कि

खूब लिखा। कभी–कभी हम उनसे रवायती अदब और हास्य व्यंग की बात तफरीहन कहते तो कहते थे कि वह बात लिखो जो आखिरत में फायदा दे।

डॉ0 साहब बड़े संघर्ष के बाद इस मुकाम पर पहुंचे थे, मगर उनमें दिखावा और अहंकार छू कर भी न गुज़रा था। वह एक कोने में पड़े रहकर काम करने में यकीन रखते थे, इसलिए नदवा के अधिकतर स्टूडेण्ट इन्हें पहचानते न थे। इसकी वजह ये भी थी कि दीगर मदारिस के तरह नदवा के छात्र हिन्दी में बहुत रुचि न लेते थे, इसलिए ''सच्चा राही'' के मुकाबले ''तामीरे हयात'' और ''अर्राइद'' नदवे के छात्रों में बहुत मक़बूल था और है।

डॉ0 साहब ने ''सच्चा राही'' की अंतिम समय तक सेवा की बल्कि ''सच्चा राही'' नाम की तरह उसके हमराही अपने अंतिम क्षण तक बने रहे। निःसंदेह डॉ0 साहब का जाना हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं का नुकसान है। रब से दुआ है कि डॉ0 साहब का बदल दे और उनकी कब्र को नूर से भर दे। आमीन।

❖❖❖

प्रश्नों के उत्तर.....

प्रश्नः नमाज़ में सर खुला रखना कैसा है?

उत्तरः सर छुपाना, टोपी और अ़मामा (पगड़ी) पहनना इस्लामी लिबास में दाखिल है, इसकी खास फजीलत आई है, खुले सर लोगों के सामने आना जाना बे अदबी है, नमाज़ एक अहम इबादत है, अल्लाह के सामने मुकम्मल बा अदब खड़ा होना है, इसलिए अदब वाले तरीके इख्तियार करना पसंदीदा और मक़सूद है, चुनांचे फुकहा ने सराहत की है कि सुस्ती और काहिली की वजह से खुले सर नमाज़ पढ़ना मकरूह है और शामी में है कि बड़े बड़े आलिमों से मंकूल है कि गर्मी के सबब भी खुले सर नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

(रद्दुल मुहतार–1/600)

❖❖❖

सहायक सम्पादक को सदमाः

बड़े भाई का इन्तिक़ाल –इदारा

मौलाना मुहम्मद गुफ़रान नदवी साहब के बड़े भाई सय्यद मुहम्मद असलम साहब का 85 वर्ष की उम्र में दिनांक 19.12.2021 की शाम 6 बजे के करीब इंतिक़ाल हो गया वह एक रोज पहले ही इलाज के लिए लखनऊ लाये गये थे, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम की मिट्टी उनके पैतृक गाँव मौजा जौरास, हैदरगढ़, बाराबंकी में हुई, सुब्ह से ही लोग सांत्वना देने आने लगे, मरहूम बड़े दीनदार, नमाज़ रोज़े के पाबन्द, समाज सुधार के लिए हर समय फिक्रमन्द और आपसी भाई चारे के प्रतीक थे। उनके परिजनों में उनकी बेवा, तीन बेटे मसऊद अहमद, अब्दुल वदूद, मुहम्मद तारिक़ नदवी और एक बेटी, भाई, पौत्रों, नवासों से भरा पूरा कुंबा है।

इदारा इन सब से संवेदना व्यक्त करता है और अपने प्रिय पाठकों से दुआ की दरख़्वास करता है। अल्लाह उनकी मगफ़िरत फरमाये।

आमीन।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने अमीरुल मोमिनीन का लक़ब क्यों अपनाया:

—इदारा

हज़रत उमर रज़ि0 ने समता के क़ानून के साथ अपने लिए अमीरुल मोमिनीन (मुसलमानों के सरदार) का गौरवशाली लक़ब अपनाने की शुरुआत क्यों किया। सच्चाई यह है कि उस ज़माने तक यह लक़ब (उपनाम/सम्बोधन) कोई गर्व की बात नहीं समझी जाती थी, बल्कि इससे सिर्फ़ पद सेवा की अभिव्यक्ति होती थी। फ़ौज के अधिकारी आम तौर से अमीर (सरदार) के नाम से पुकारे जाते थे। अरब के काफ़िर (इस्लाम विरोधी) आँहज़रत सल्ल0 को अमी–ए–मक्का (मक्का के सरदार) कहा करते थे, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास को इराक़ में लोगो ने अमीरुल मोमिनीन कहना शुरु कर दिया था।

हज़रत उमर रज़ि0 को इस लक़ब का ख़्याल तक न था। इसकी शुरुआत यूं हुई कि एक बार लबीद बिन रबीया और अदी बिन हातिम रज़ि0 मदीना में आये और हज़रत उमर रज़ि0 की ख़िदमत में हाज़िर होना चाहा। नियमानुसार सूचना भेजी और चूंकि कूफ़ा में रह कर अमीरुल मोमिनीन का शब्द ज़बान पर चढ़ा हुआ था, सूचित करते वक़्त यह कहा अमीरुल मोमिनीन को हमारे आने से अवगत करो। अम्र बिन अलआस रज़ि0 ने अवगत किया और इसी पदवी को इस्तेमाल किया। हज़रत उमर रज़ि0 ने इस ख़िताब की वजह पूछी। उन्होंने लक़ब की कैफ़ियत बयान किया। हज़रत उमर रज़ि0 ने भी इस लक़ब को पसन्द किया और उसी तारीख से इसकी (शब्द अमीरुल मोमिनीन) शोहरत आम हो गयी। इस अवसर पर सम्भव है कि एक तंगनज़र को यह ख़्याल हो कि हज़रत उमर रज़ि0 को ख़िलाफ़त से अगर किसी क़िस्म की शान शोकत (मान सम्मान) का उद्देश्य न था तो उन्होंने ख़िलाफ़त अख़्तियार क्यों की? बेग़र्ज़ी (निःस्वार्थता) की यह अनिवार्यता थी कि वह खुदा के इस इनआ़म की ज़िम्मेदारी को स्वीकार ही न करते। लेकिन यह सोच बिल्कुल सतही सोच है। हज़रत उमर रज़ि0 निःसन्देह खिलाफत से हाथ उठा लेते लेकिन दूसरा कौन व्यक्ति था जो इसको संभाल सकता। हज़रत उमर रज़ि0 निश्चित रूप से जानते थे कि यह कष्टदायी है उनके सिवा किसी से उठ नहीं सकता। क्या ऐसे समय में उनकी नेकी का यह तक़ाज़ा था कि वह जान बूझ कर लोगों की बदगुमानी के डर से बाज़ आ जाते। अगर वह ऐसा करते तो ख़ुदा को क्या जवाब देते। उन्होंने पहले ही दिन ख़ुत्बा (सम्बोधन) में यह कह दिया था कि–

अनुवादः– यानी अगर मुझको उम्मीद न होती कि मैं तुम लोगों के लिए सबसे ज़ियादा उपयोगी दृढ़निश्चिय और मामले को जटिल समस्याओं के लिए मज़बूत सहायक हूँ तो मैं इस पद को कुबूल न करता।

इससे ज़ियादा स्पष्ट वे शब्द हैं जो इमाम मुहम्मद ने मुवत्ता शरीफ में बयान किये हैं–

अनुवादः– यानी अगर मैं जानता कि कोई व्यक्ति इस काम (ख़िलाफ़त) के लिए मुझ से ज़ियादा सामर्थ्य रखता है तो खिलाफत कुबूल करने की अपेक्षा मेरे नज़दीक ज़ियादा आसान था कि मेरी गर्दन मार दी जाय।

❖❖❖

२६ जनवरी एक स्मारक दिवस

—इदारा

आज़ाद भारत में यह न भुलाई जाने वाली तारीख़ है यही वह दिन और तारीख़ है जिस दिन भारत वासियों पर भारतीय संविधान लागू हुआ, इसी संविधान के अन्तर्गत डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद सर्वप्रथम राष्ट्रपति और पण्डित जवाहर लाल नेहरू सर्वप्रथम प्रधानमंत्री नियुक्त हुए यद्यपि 15 अगस्त, 1947 हमारा स्वतंत्र दिवस है परन्तु 26 जनवरी 1950 ई0 हमारा गणतंत्र दिवस है, जिसको हम लोकतंत्र दिवस भी कहते हैं, हमारा भारतीय संविधान ऐसी विशेषताओं पर आधारित है, जिसकी छाया में समस्त जाति और धर्म वालों को फलने फूलने उन्नति करने का अवसर दिया गया है, इस संविधान की रचना इस सिद्धान्त के साथ हुई कि पूर्ण देश समान्ता और एकता के सूत्र में बंधा हो, इसी में देश की उन्नति और मज़बूती का राज़ पोशीदा है, परन्तु बहुत ही दुख के साथ यह कहना पड़ता है कि इस 75, 76 साल में हमने संविधान के इस मूल सिद्धान्त को भुला दिया और अपना और अपनी पार्टी का स्वार्थ सामने रखा इस समय हमारा देश बल्कि मानवता तबाही के कगार पर है, लॉ एण्ड आर्डर नाम की कोई चीज़ नहीं है, साम्प्रदाय वाद का बोल बाला है, दीहाती कहावत में ''जिसकी लाठी उसकी भैंस'' वास्तविकता और सत्यता का कोई प्रश्न नहीं, हमारा दृष्टिकोंण घृणा और नफ़रत पर न हो, बल्कि एकता और प्रेम पर हो, मानवता बुन्यादी चीज़ है, यदि मानवता जीवित रहेंगी तो धर्म और जातियाँ भी जीवित रहेंगी एक बड़े विद्धान के कथनानुसार ''आग पहले दूसरों को जलाती है, बाद में अपने को जलाती है।''

26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर मासिक पत्रिका ''सच्चा राही'' के पाठकों की सेवा में निम्नलिखित सन्देशः—

दिवस मनायें, लोक तंत्र का _ जाप करें हम प्रेम मंत्र का
सबसे ऊँचा रहे तिरंगा _ रहें सदा हम देश तिलंगा
भारत प्यारा देश हमारा _ देश हमारा, देश हमारा
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई _ आपस में सब भाई भाई
रब की गाएं आओ बड़ाई _ कभी न हो, याँ धर्म लड़ाई
ऊँच नीच हम दूर करेंगे _ भेद भाव हम दूर करेंगे
निर्धनता हम दूर करेंगे _ जनसेवा हम खूब करेंगे
हर कोई याँ शिक्षित होगा _ प्रेम ज्ञान का पण्डित होगा
पाप यहां पर खण्डित होगा _ आत्याचारी दण्डित होगा
भारत प्यारा देश हमारा _ देश हमारा, देश हमारा

सामाजिक अपराध और उनका सुधार

–नईमुर्रहमान सिद्दीकी नदवी

–हिन्दी अनुवादः मौ0 मेराजुल हसन नदवी

अल्लाह तआ़ला ने अपने बंदों पर अनगिनत एहसानात फरमाए हैं उनमें सबसे बड़ा एहसान यह है कि उन्हें सीधी राह दिखाने के लिए अपने महबूब बंदों को नबी और रसूल बना कर हर दौर में और हर इलाके में भेजा और जब कभी इंसानों की समाजी व मजहबी जिंदगी में कोई बिगाड़ पैदा हुआ तो उन अंबिया–ए–किराम अलैहिस्सलाम ने उसको दूर किया अंबिया–ए–किराम अलै0 का यह सिलसिला आखरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर खत्म हो जाता है अल्लाह तआ़ला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक मुकम्मल शरीयत और जामे किताब देकर मबऊस फरमाया जिसमें इंसान की फलाह व कामयाबी के तमाम जाबते बयान फरमा दिये और उन तमाम बातों से मना फ़रमाया जिन की वजह से आपस में नफरत और मुखालफत के जज्बात भड़कते हैं जिसके नतीजे में पूरा समाज तबाही के दहाने पर पहुंच जाता है हादिए आजम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट रूप से उन तमाम कामों की निशानदेही की है जिनसे बचे बगैर एक सालेह समाज का गठन नामुमकिन है उन बुरी आदतों में खुदगर्जी, बुग़्ज, हसद, कीना, कपट, गीबत, चुगली, बुहतान, वगैरह वह खतरनाक बीमारियां हैं जो इंसान की समाजी ज़िन्दगी के लिए नासूर हैं।

आजकल इन तमाम सामाजिक जरायम की शरह बढ़ती चली जा रही है सितम बाला–ए–सितम यह है कि उनके तअल्लुक से एहसासे जुर्म खत्म होता चला जा रहा है उसे फैशन बना लिया गया है कभी–कभी मजलिस को गरमाने और मूड फ्रेश करने के लिए उनका इस्तेमाल किया जाता है और गुनाह कमाया जाता है जैसे गीबत (पीठ पीछे किसी की बुराई करना) को ''तबसिरे'' (टिप्पणी) का नाम दे दिया गया, चुगलखोरी को ''सामने वाले की ख़ैरखाही'' समझा जाता है झूठ और दोगलेपन को ''मस्लहत'' कहा जाता है, जब कि कुरआ़न और हदीस में इसको सख़्ती से मना किया गया है अगले पन्नों में इन्हीं चंद बातों की तरफ तवज्जोह दिलाई गई है अल्लाह से दुआ है कि मुस्लिम समाज को इन बुराइयों से पाक फरमा दे और मुसलमानों में इस तअ़ल्लुक से एहसास पैदा फरमाए।

आमीन।

गीबतः–

ग़ीबत यह है कि किसी शख्स की गैरमौजूदगी में उसका ना मुनासिब अंदाज से जिक्र करना कि अगर उसे इसका इल्म हो जाए तो ना पसंद करे चाहे वह बुराई उसमें मौजूद ही क्यों न हो क्योंकि अगर वह बात उसमें मौजूद नहीं है तो यह बुहतान और इल्ज़ाम है, जो और बुरी बात है हदीस पाक में इरशाद है अपने भाई का ऐसा जिक्र करना जिसको वह ना पसंद करे, चाहे इस बात का तअल्लुक़ उसके जिस्मानी ऐब से हो, जैसे किसी को गंजा,

भेंगा, पस्ता कद, काला वगैरह कहा जाए या उसका तअ़ल्लुक अख़लाक़ी बुराई से हो जैसे बखील, मगरूर बुज़दिल वगैरह, या उसके हसब नसब में ऐब लगाए, ऊपर जिक्र की गई तमाम बातें गीबत में दाखिल हैं।

एक गलत फहमी का खात्माः—

आमतौर से लोगों को यह गलत फहमी हो जाती है कि अगर वह बुराई उस व्यक्ति के अंदर मौजूद है तो उसके बयान करने में कोई बुराई नहीं है और उसे गीबत नहीं कहा जाता है लेकिन ऐसा नहीं है हदीस शरीफ में हैः हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया की ग़ीबत क्या है? आप रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हारा अपने भाई की कोई बात इस अंदाज़ से जिक्र करना जिसे वह ना पसंद करता हो गीबत है, सहाबा ने पूछा आपका क्या ख्याल है अगर वह बात उस भाई में मौजूद हो जो मैं कह रहा हूं आपने इरशाद फरमाया अगर वह चीज़ उसमें मौजूद है जो तुम कह रहे हो तो तुमने उसकी गीबत की और अगर जो बात तुम कह रहे हो उसमें मौजूद ही नहीं है तो तुमने उस पर बुहतान बांध दिया।

(अबू दाऊद किताब उल अदब)

गीबत का हुक्मः—

गीबत इस्लाम की नजर में बहुत बुरा काम है कुर्आन मजीद में इसकी सख्त बुराई बयान की गई है और उसे अपने मुर्दा भाई के गोश्त खाने की तरह करार दिया गया है अल्लाह तआला का इरशाद है तुम में से कोई एक दूसरे की गीबत ना करे क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करता है कि अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाए यकीनन तुम इसको ना पसंद करोगे।

(सूरः हुजरात आयत नंबर 12)

इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल वदा के खुतबे में इरशाद फरमाया कि मुसलमान का खून उसका माल उसकी इज्जत हर मुसलमान पर हराम है और गीबत करने से एक मुसलमान की आबरू और इज्जत पर दाग लगता है। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया ग़ीबत से बचो क्योंकि गीबत ज़िना (बलात्कार) से ज़ियादा बुरी चीज है! इसकी वजह यह है कि आदमी ज़िना से तौबा करे और अल्लाह तआला अपनी रहमत से माफ कर दे तो वह गुनाह उससे माफ हो सकता है लेकिन गीबत का गुनाह उस वक्त तक माफ नहीं होता जब तक की वह व्यक्ति माफ न कर दे जिसकी ग़ीबत की है हजरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया जब मेरे रब ने मुझे मेराज का सफर कराया तो मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुआ जिनके तांबे के नाखून थे वह अपने चेहरे और सीनों को नोच रहे थे मैंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से पूछा यह कौन लोग हैं तो उन्होंने जवाब दिया यह वह लोग हैं जो दूसरे लोगों का गोश्त खाया करते थे यानी ग़ीबत किया करते थे और लोगों की इज़्ज़त आबरू पर हमले किया करते थे इस मौके पर यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि ग़ीबत सिर्फ ज़बान तक ही सीमित नहीं है, हर वह काम ग़ीबत में शामिल है

जिससे तुम्हारे भाई की बुराई किसी दूसरे के सामने ज़ाहिर हो जाए चाहे इशारे से हो या हाव–भाव से हो या किसी और हरकत से सब हराम और नाजायज़ है हज़रत आयशा रज़ि0 फरमाती हैं कि हमारे पास एक औरत आई और जब वह चली गई तो मैंने उम्मुल मोमिनीन सफिया रज़ि0 के छोटे क़द को ज़ाहिर करने के लिए हाथ से इशारा किया उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया आयशा तुमने उसकी ग़ीबत की है किसी की नकल उतारने का भी यही हुक्म है बल्कि इससे ज़ियादा सख़्त है कि नक़ल उतारने से उसकी पूरी तस्वीर दिल दिमाग़ में आ जाती है अल्लाह तआ़ला का इरशाद है हर शख्स जो लोगों की बुराई करता है ऐब लगाता है और इशारों इशारों में बुराई करता है उसके लिए बड़ी तबाही है

चुगलीः–

गीबत की तरह चुगली भी बहुत बुरी हरकत है और सख्त गुनाह है हदीस में इरशाद है कि चुगलख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा! एक मर्तबा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं तुम्हें बताऊं सबसे बुरे लोग कौन हैं फिर खुद ही इरशाद फरमाया चुगलियां करने वाले और दोस्तों के आपसी तअल्लुक़ात खराब करने वाले, चुगलखोर का काम यह होता है कि दो आदमियों के बीच में झूठी सच्ची बातें बयान करके एक दूसरे के खिलाफ भड़का देता है और अपना असर जताने और अपने को खैरखवाह बना कर ज़ाहिर करने की कोशिश करता है चुगल खोरी एक फितने वाला काम है जिसके नतीजे बाज़ हालतों में बहुत खतरनाक शकल में ज़ाहिर होते हैं और क़त्ल व खून खराबे तक की नौबत आ जाती है इसी के साथ–साथ यह और कई गुनाहों का संग्रह है। इसमें गीबत, बुहतान, तजस्सुस, झूठ, निफाक, गरज मुख्तलिफ बद अखलाकियों के अनासिर जमा हो जाते हैं इसीलिए अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों की बातों पर ध्यान न देने पर ज़ोर दिया है। इरशाद हैः तू ऐसे लोगों का कहना ना मान जो बहुत कसमें खाता है स्वयं बेआबरू है लोगों पर आवाज़ें और जुमले कसता है चुगलियां खाता फिरता है।

(सूरः कलम– 10, 11)

निफाक़ः–

ग़ीबत और चुगली की तरह निफाक़ का मर्ज भी मुस्लिम सोसाइटी में आम है और लगभग आम और खास सभी इस से परेशान हैं निफाक़ जाहिर व बातिन में विरोधाभास को कहते हैं जो ज़बान से ज़ाहिर किया जाए अंदर उसके खिलाफ हो, कुर्आन हदीस में मुनाफ़िकीन की सख्त मज़म्मत की गई है, इरशाद बारी ताला है मुनाफिकीन जहन्नम के सबसे निचले दर्जे में होंगे!

निफाक़ की दो किस्में हैंः–

1. निफाक़े एतिकादी।
2. निफाक़े अमली।

निफाक़े एतिकादी यह है कि जबान से अल्लाह व रसूल का इकरार किया जाए और दिल में कुफर छुपाय हुए हो ,और निफाक़ अमली यह है कि अकीदा तो ठीक हो लेकिन आमाल मुनाफिकीन के जैसे हों अहादीस मुबारका में निफाक़ की कई अलामतें बयान की गई हैं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मुनाफिक की तीन निशानियाँ हैंः–

(1) बात करे तो झूठ बोले। (2) वादा करे तो वादाखिलाफी करे। (3) और अमानत रखी जाए तो ख्यानत करे (बुखारी किताबुलईमान)। दूसरी हदीस में एक और निशानी बताई गई है कि जब किसी से झगड़ा करे तो गाली गलौज पर उतर आए (बुखारी) मुनाफिकत की एक अलामत दो रूखापन भी है और यह दो रूखापन चुगल खोरी से ज़ियादा खतरनाक है क्योंकि चुग़लखोर तो एक तरफा बात नकल करके फसाद बरपा करता है लेकिन दोगला शख्स दो ग्रूपों को एक दूसरे के खिलाफ उकसाता है।

हदीस शरीफ में आता है कि दुन्या में जिसके दो रुख होंगे क़यामत में उसके मुंह में आग की दो ज़बानें होंगी।
(अबू दाऊद किताब उल अदब)

गीबत और चुगली के बारे में आप पढ़ चुके हैं कि शरीयत की निगाह में यह कितने घिनौने ज़रायम हैं, इसी फेहरिस्त में एक जुर्म बुहतान भी है, बल्कि उस के आगे तमाम बुराइयां छोटी हैं। बुहतान का मतलब यह है कि किसी की ज़ात पर बग़ैर तहक़ीक़ झूठा इल्जाम लगा देना– अमूमन जाती दुश्मनी और सियासी फायदे के तहत लोग अपने मुखालिफीन के व्यक्तित्व को दागदार करने और उनकी किरदार कुशी के लिए इस तरह के इल्जाम लगाते हैं और कुछ लोग वक्ती तौर पर इस प्रोपेगण्डे का शिकार भी हो जाते हैं, और इन बातों पर यकीन करते हैं और उस शख्स से बद गुमान हो जाते हैं लेकिन हकीकत बहुत जल्द साफ हो जाती है और इल्ज़ाम लगाने वाले को शर्मिंदा होना पड़ता है लिहाजा सच्चे मुसलमान का तरीका यह है कि वह सिर्फ सुनी सुनाई बातों पर यकीन न करे और उसे लोगों में बयान करना शुरू ना कर दे, आयत शरीफा में है: ऐ ईमान वालो अगर कोई फासिक तुम्हारे पास कोई खबर लाए तो तहकीक कर लो कहीं किसी कौम को बेजा तकलीफ न दे बैठो, फिर अपने किए पर पछताते रह जाओ, हदीस शरीफ है आदमी के झूठा होने के लिए यही काफी है कि वह जो कुछ सुने उसे बिना किसी तहकीक़ बयान कर दे।

इस सिलसिले में आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है जो किसी मुसलमान की किरदार कुशी करता है और कोई इल्जाम लगाता है अल्लाह तआला उसे जहन्नम के पुल पर रोके रखेगा यहां तक कि वह अपने इस लगाए हुए इल्जाम से निकल आए (उसका खामियाजा भुगत ले) यह वह असबाब हैं जिन की वजह से आज मुस्लिम सोसाइटी में फसाद और बिगाड़ बरपा है और जो सोसाइटी की तामीर और तरक्की में रुकावट बने हुए हैं इसलिए अगर हम नेक सालेह व अमन वाला इस्लामी समाज बनाना चाहते हैं तो इन बीमारियों के इलाज की तरफ ध्यान दें और इस्लाह की फिक्र करें उन वादों को ध्यान में रखें जो इन बुराइयों के खत्म करने के लिए आये हैं और उन दण्डों से लोगों को बाख़बर करें जो इन बुराइयों के करने के बदले में आई हैं अल्लाह तआला हम सबको इस पर अमल करने की तौफीक अता फरमाए।

आमीन।

◆◇◆

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۔ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक ________   ________ تاریخ

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़रात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू के जुमले पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी जुमले से मदद लीजिए

یا رب اب میں سو جاؤں
جگا بہت اب سو جاؤں
نبی کو دیکھوں رؤیا میں
کروں زیارت رؤیا میں
پیارے نبی کو کروں سلام
روتے ہوئے میں کروں سلام
نبی پے یا رب الف سلام
رحمت ان پر رہے مدام
رحمت ان کی آل پر
ان کی سب ازواج پر
ان کے سب اصحاب پر
ان کے سب احباب پر

या रब अब मैं सो जाऊँ
जगा बहुत अब सो जाऊँ
नबी को देखूँ रुअ़या में
करूँ ज़ियारत रुअ़या में
प्यारे नबी को करूँ सलाम
रोते हुए मैं करूँ सलाम
नबी पे या रब अल्फ सलाम
रहमत उन पर रहे मुदाम
रहमत उनकी आल पर
उनकी सब अज़वाज पर
उनके सब अस्हाब पर
उनके सब अह़बाब पर।

नोटः रुअया– ख्वाब अल्फ– हज़ार बार